CTET 2023 -24

CDP

बाल विकास एवं शिक्षणशास्त्र

PAPER - 1

SACHIN CHOUDHARY

SACHIN ACADEMY

FARMAN MALIK

CP STUDY POINT

SACHIN ACADEMY

YouTube

WARNING



The E-Notes is Proprietary & Copyrighted Material of Sachin Academy. Any reproduction in any form, physical or electronic mode on public forum etc will lead to infringement of Copyright of Sachin Academy and will attract penal actions including FIR and claim of damages under Indian Copyright Act 1957.

ई-नोट्स Sachin Academy के मालिकाना और कॉपीराइट सामग्री है। सार्वजनिक मंच आदि पर किसी भी रूप, भौतिक या इलेक्ट्रॉनिक मोड में किसी भी तरह फैलाने से Sachin Academy के कॉपीराइट का उल्लंघन होगा और भारतीय कॉपीराइट अधिनियम 1957 के तहत प्राथमिकी और क्षति के दावे सहित दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

NOTE - कुछ लोगो ने ये नोट्स शेयर किये थे या इन्हे गलत तरीके से बेचा था तो उनके खिलाफ कानून कार्यवाही की जा रही है इसलिए आप अपने नोट्स किसी से भी शेयर न करे।

अभिवृद्धि (Growth)



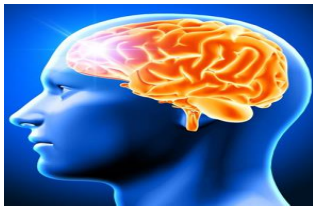
- जब हमारे शरीर की संरचना या आकार बढ़ना शुरू होता है उसे वृद्धि कहते है ।
  when our body structure or shape starts growing, this is known as growth.

- वृद्धि का स्वरुप बाह्य होता है।
  Growth is External Level.

- वृद्धि कुछ समय के बाद रुक जाती है । उदहारण:- लम्बाई, चौड़ाई
  Growth stops after a time span.

- वृद्धि क्रम के अनुसार नहीं चलती । उदहारण :- कभी हमारी लम्बाई बढ़ती है तो कभी हमारा भार बढ़ता है।
  Growth in not a seqvential process e.g., at times there is growth in our height whereas at other times there is growth in our weight.

विकास (Development)



- जब हमारे मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, तथा बौद्धिक पक्षों में परिपक्वता आती है तो उसे विकास कहते है
  Where there is a maturity in our mental, social, emotional or intellectual pattern, this is known as development.

- विकास का स्वरुप आंतरिक एवं बाह्य दोनों होता है । उदहारण :- मस्तिष्क, भाषाज्ञान,
  Development is both at external and internal levels.

- विकास जीवन भर चलता रहता है ।
  Development continues throughout our life.

- विकास में निष्चित क्रम होता है । उदहारण :- हमे अपना जितना विकास करना होता है उतना हो जाता है। मानसिक विकास, सामाजिक विकास जितना हम चाहेंगे उतना ही होगा
  Development is a seqvential process. We can develop as much as we want. Mental development, social development happens as per our efforts and wishes.

SACHIN ACADEMY

- वृद्धि का हम मापन (Measurement) कर सकते है
  उदाहरण :- हम भार, लम्बाई को नाप सकते है।
- Growth can be measured, e.g., we can measure our height or weight.

- वृद्धि केवल परिमाणात्मक होती है ।
  Growth is only quantative.

- वृद्धि होने से विकास हो भी सकता है और नहीं भी ।
  उदहारण :- जब कोई आदमी मोटा होता जा रहा है तो उसकी वृद्धि हो रही है परन्तु ये जरुरी नही कि मोटा होने से उसका क्रियात्मक विकास भी बढ़े ।

- Beacause of growth there may be or not may be development. Example :- When a person is gaining weight, it is not necessary that his IQ is also increasing.

- विकास का हम सीधे सीधे मापन नही कर सकते ।
  उदहारण :- हम सामाजिक विकास, नैतिक विकास का मापन नही कर सकते हम केवल मानसिक विकास का मापन कर सकते है ।
  Development can't be measured, directly e.g., our social or moral development cannot be measured, however our mental development

- विकास परिमाणात्मक और गुणात्मक दोनों होता है
  Development is both quantitative and qualitative.

- विकास वृद्धि के बिना भी संभव है । क्योंकि कुछ व्यक्तियों का आकार, ऊँचाई या भार नही बढ़ता परन्तु उनमे नैतिक विकास, सामाजिक विकास, बौद्धिक विकास अवश्य होता है ।

Development is possible without growth also. Some people may not grow in shape, height, weight but there is development in their moral, social domain.

SACHIN ACADEMY

✦ **परिपक्वता (Maturation) :- अनुवाँशिक विन्यास (genetic desposition) के पूर्व निर्धारित रूप से प्रकट होने का process maturation कहलाता है**

- **यह heredity से related होता है**
- **बड़े होने पर maturity आती रहती है**

विकास के आयाम (Domain of development)

विकास :- विकास बहुआयामी (multidimensional) होता है और multidirection में होता है ।

- **शाररिक विकास (physical development)**
- **गत्यात्मक विकास (motor development) :- यह एक तरह से बालक के शाररिक विकास से ही जुड़ा है। यह muscles,हडियो की क्षमता और उन पर control करने से सम्बंधित होता है**

- **गामक विकास में बालको के चलने, दौड़ने, कूदने, भोजन करने आदि विषय को शामिल किया गया है इसे दो भागो में बांटा गया है Fine Motor Skill And Gross Motor Skill**

Fine Motor Skill And Gross Motor Skill

Fine motor skills - इसमें **muscles** का कम **use** होता है

Examples –

SACHIN ACADEMY



Writing



coloring



Cutting



breaking chapati

Gross Motor Skills :- इसमें **muscles** का ज्यादा **use** होता है

Examples –



Swimming



Jumping



Running

SACHIN ACADEMY

- मानसिक विकास / संज्ञानात्मक विकास (mental / cognitive development)
- सामाजिक विकास (social development)
- सांवेगिक विकास (Emotional Development)
- नैतिक विकास (Moral Development)
- भाषा विकास (Language Development)

बाल विकास के सिद्धांत

(Principle of Child Development)

(1) समान प्रतिमान का सिद्धांत (Principle of Similar Pattern)

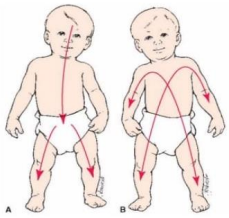
इसके अनुसार प्रत्येक जाति अपनी जाति के अनुरूप के विकास के प्रतिमान का अनुसरण करती है ।

उदहारण :- मानव, हाथी





(2) विकास की दिशा का सिद्धांत (Principle of Direction)



विकास की दिशा सिर से पैर की तरफ चलती है । जब हमारी विकास की दिशा सिर से पैर की तरफ होती है तो इसे **मस्काधोमुखी (Cephalocaudal)** भी कहते है । दूसरी तरफ जब हमारे विकास का क्रम मध्य से शुरू होकर बाहर की तरफ होता है तो यह समीप **दुरभिमुख (Proximodistal)** कहलाता है । अतः कह सकते है कि विकास क्रमिक होता है

(3) निरंतरता का सिद्धांत (Principle of continuity)

विकास कभी न रुकने वाली प्रक्रिया है । यह जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है केवल इसकी मंद और तेज होती है। यह **माँ के गर्भ से मृत्यु** तक चलता है

SACHIN ACADEMY

(4) सामान्य से विशिष्ट क्रियाओ का सिद्धांत (Principle of general to specific Response)

हमारा विकास सदैव सामान्य से विशिष्ट क्रियाओ की ओर चलता है न की विशिष्ट से सामान्य की ओर ।

उदहारण :- उठना, बैठना, चलना, दौड़ना

(5) पूर्वानुमान का सिद्धांत (Principle of Predictability)

विकास पूर्वानुमान होता है क्योंकि हम पहले ही अनुमान लगा सकते है कि विकास किस दिशा में ज़्यादा होगा ।

(6) एकीकरण का सिद्धांत (Principle of Unitary Process)

बच्चो में एकीकरण का गुण पाया जाता है जब हम किसी एक काम को करने के लिए अपने हाथ पेरो को एक साथ मिलाकर काम करते है तो वह एकीकरण कहलाता है ।

(7) व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धांत (Principle of Individual Difference)



बच्चो का विकास व्यक्तिगत विभिन्ता के अनुसार चलता है किसी में विकास की गति तेज तो किसी में कम होती है।

- बच्चो के विकास में individual differences, **heredity and environment** की पारस्परिकता पर depend करता है, इन्ही दोनों की वजह से individual differences होते है
- हमारी intelligence , motivation, interest etc अलग - अलग होती है

SACHIN ACADEMY

(8) वर्तुलाकार बनाम रेखीय प्रगति का सिद्धांत (Principle of Spiral verses Linear Advancement)

विकास कभी भी रखिये नही होता मतलब वह कभी भी सीधी रेखा में नहीं चलता । कभी उसकी गति धीमी तो कभी तेज होती है ।

(9) अंतरसंभन्दित विकास का सिद्धांत [Principle of Inter Development]

शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्म।, सामाजिक और अन्य प्रकार के विकास अन्तरसम्बंदित और परस्पर निर्भर करते है ।

बाल विकास की अवस्थाएं
(Stage of Child Development)



1. प्रसवपूर्व [Pre-natal Stage] (9 महीने या 280 दिन)

- **यह अवस्था माता के गर्भाधान (Conception) से शुरू होती है।**



2. शैशवास्था [Infancy Stage] (जन्म - 2 वर्ष)

- **इस अवस्था में शिशु पूर्ण रूप से माता-पिता पर निर्भर रहता है उसका व्यवहार मूल प्रवर्तियो पर आधारित होता है।**
- **तेज शारीरिक, मानसिक, अधिगम की अवस्था**
- **नैतिकता (morality) का आभाव**

SACHIN ACADEMY

3. पूर्व बाल्य अवस्था [Early Childhood Stage] (2 - 6 वर्ष)



- इसमें बच्चा अनुकरण (Imitation) द्वारा सीखता है।
- इस अवस्था में जिज्ञासा (curiosity) ज्यादा होती है।
- इस अवस्था को toy age कहा जाता है
- यह भाषा अर्जन के लिए संवेदनशील चरण (sensitive period) है
- इस अवस्था में बच्चा कल्पनाशीलता वाले games में active रूप से भाग लेता है।

4. उत्तर बालव्यवस्था / बालव्यवस्था (later childhood or childhood) (6-12)



- इसे तार्किक चिंतन (logical thinking) की अवस्था कहा जाता है।
- इसे 'आरम्भिक स्कूल ' की age कहा जाता है।
- इसे 'गन्दी अवस्था' कहा जाता है।
- इसे स्फुर्ति की अवस्था या smart age कहा जाता है।
- इसे खेलो की अवस्था Games Stage कहा जाता है।
- इस अवस्था में संग्रहण (storage) की प्रवृति विकसित होने लगती है।
- इसे टोली / समहू / gang की अवस्था कहा जाता है।
- इसे जीवन का अनोखा काल (unique period) कहा जाता है।

5. किशोरावस्था [Adolescence] (12 / 13 - 18 वर्ष)

SACHIN ACADEMY

- इसे जीवन का सबसे कठिन काल कहा जाता है।
- इसे संघर्ष, तनाव, आंधी - तूफ़ान और उलझन की अवस्था कहा जाता है।
- इसमें विषभलिंगी आकर्षक होता है।
- इस अवस्था को स्वर्ण काल या golden age कहा जाता है।
- इस अवस्था में वीर पूजा (Hero Worship) की भावना होती है।
- इस अवस्था में बच्चे अमूर्त चिंतन (Abstract Thinking) करते है।



बुद्धि (Intelligence)



- Intelligence समस्याओं को सुलझाने में मदद करती है
- बुद्धि से ही व्यक्ति तर्क करता है , thinking करता है , imagination करता है
- Intelligence एक multi-dimensional है और कठिन योग्यताओ (complex capabilities) का एक सेट होती है
- बुद्धि स्थायी और परिवर्तनशील होती है
- बुद्धि अनुकूलन (adaptation) स्थापित करने में help करती है



बुद्धि के प्रकार (Type of Intelligence)

थार्नडाइक के अनुसार बुद्धि के तीन प्रकार होते हैं

SACHIN ACADEMY

1. मूर्त बुद्धि (Concrete Intelligence) :- मूर्ति बुद्धि से अभिप्राय जो चीजें हमारे सामने होती हैं मूर्त का मतलब प्रत्यक्ष जिन चीजों को देखकर हम कार्य करते हैं मूर्त बुद्धि के अंतर्गत आती हैं

- मकैनिक, कारीगर मूर्त बुद्धि के ही उदाहरण है



2. अमूर्त बुद्धि (Abstract Intelligence) :- जो बुद्धि हमें दिखाई नहीं देती जो भावनाओं और विचारों से संबंधित होती है कवि, डॉक्टर, चित्रकार अमूर्त बुद्धि के उदाहरण है

3. सामाजिक बुद्धि (Social Intelligence) :- जो समाज सेवी होते हैं समाज के लिए कार्य करते हैं सामाजिक बुद्धि में आते हैं

- नेता, व्यवसायी, समाजसेवी, अध्यापक आदि सामाजिक बुद्धि के उदाहरण हैं



✦1916 ई. में टर्मन के द्वारा बुद्धि लब्धि का संशोधित सूत्र दिया इन्होंने संशोधन किया वह था सूत्र

$$\frac{\text{मानसिक आयु (}\text{[illegible]}\text{)}}{\text{वास्तविक आयु(}\text{[illegible]}\text{)}} \times \text{[illegible]}$$

बुद्धिलब्धि और उसकी स्थिति

IQ	स्थिति
25 से कम	जड़ बुद्धि (idiot)
25-49	मूढ़ बुद्धि

SACHIN ACADEMY

50- 69	मूर्ख बुद्धि
70-79	मंदबुद्धि
80-89	सामान्य बुद्धि से नीचे
90-109	सामान्य बुद्धि (average)
110-119	सामान्य बुद्धि से ऊपर
120-129	तीव्र बुद्धि
130-139	प्रखर बुद्धि
140 से अधिक	प्रतिभाशाली (gifted)



प्रतिभाशाली बच्चे (Gifted Student) -

- अपने decision में independent होते है
- इनमे आत्म क्षमता (self-efficacy) high होती है
- Creative ideas होते है इनके पास
- इनमे curiosity होती है
- इन्हे ऐसे support की जरुरत है जो school के through नहीं मिल पाता
- इनका mental process, high category का होता है।

SACHIN ACADEMY

बुद्धि के सिद्धांत (Theory of Intelligence)

- **एक कारक सिद्धांत (Uni Factor Theory) :-** एक कारक सिद्धांत का प्रतिपादन बिने ने किया है इन्होंने बताया सभी व्यक्तियों में एक ही प्रकार की बुद्धि होती है जो सभी कार्यो में कार्य करती है

➢ **द्वि- कारक सिद्धांत (Two Factor Theory) :-** इस कारक को स्पीयरमैन के द्वारा दिया किया गया उन्होंने बताया कि बुद्धि दो तत्वों से मिलकर बनी है यह दो तत्व है



1. **सामान्य तत्व G.Factor general ability :-** हर व्यक्ति में सामान्य बुद्धि जन्मजात होती है और यह हर किसी में अलग अलग होती है
2. **विशिष्ट तत्व S. Factor specialability :-** यह दूसरो से अर्जित करने वाली बुद्धि होती है



➢ **समूह तत्व कारक सिद्धांत (Group Factor Theory) :-** इस सिद्धांत का प्रतिपादन थर्सटन द्वारा किया गया इस सिद्धांत के अनुसार बुद्धि कई प्रकार कि योग्यताओं का मिश्रण है जो विभिन्न समूहों में पायी जाती है

हॉवर्ड गार्डनर का बहु-बुद्धि सिद्धान्त /Multiple intelligence



यह theory इस बात पर जोर देती है की बुद्धि की अलग अलग दशाएं (forms) है

1. शाब्दिक भाषायी बुद्धि (Verbal-linguistic Intelligence) :- इसके माध्यम से शब्दों और भाषा का ज्ञान होता है।

➢ जिन व्यक्तियों में इनका विकास अधिक हो तो वे वकील , कवि, पत्रकार आदि बनते है।



2. तार्किक गणितीय बुद्धि (Logical Mathematical Intelligence) :- इसमें तार्किक योग्यता, Math Calculation अधिक होती है।

SACHIN ACADEMY

- जिन व्यक्तियों में इनका विकास अधिक हो तो वे Accountant, Banker, Scientist आदि बनते है।

3. स्थानिक बुद्धि (Spatial Intelligence) :- अमूर्त तथ्यों के आधार पर मानसिक छवि बनाना



- जिन व्यक्तियों में इनका विकास अधिक हो तो वे मूर्तिकार, चित्रकार, Architecture आदि बनते है।

4. शारीरिक गतिक बुद्धि (Bodily Kinesthetic Intelligence) :- शरीर को गति देने वाली बुद्धि ।



- जिन व्यक्तियों में इनका विकास अधिक हो तो वे अभिनेता -अभिनेत्री, Athlete, Dancer आदि बनते है।

5. संगीतात्मक बुद्धि (Musical Intelligence) :- इस बुद्धि के अंतर्गत संगीत की बुद्धि अधिक होती है।



- जिन व्यक्तियों में इनका विकास अधिक हो तो वे Singer, Entertainer आदि बनते है।

6. अंतर्व्यैयक्तिक बुद्धि (Interpersonal Intelligence) :- इसके द्वारा दूसरे व्यक्ति के साथ कैसे interact किया जाये, यह पता चलता है।





SACHIN ACADEMY

➢ जिन व्यक्तियों में इनका विकास अधिक हो तो वे नेता, सामाजिक कार्यकर्ता, आदि बनते है।



7. अंत: व्यक्तिक बुद्धि (Intrapersonal Intelligence) :- इसके द्वारा खुद के साथ interact किया जाता है।

➢ जिन व्यक्तियों में इनका विकास अधिक हो तो वे आध्यात्मिक गुरु बनते है।



8. प्रकृतिवादी बुद्धि (Naturalistic Intelligence) :- इस बुद्धि के व्यक्ति प्रकृति के नजदीक होते है।

➢ जिन व्यक्तियों में इनका विकास अधिक हो तो वे किसान, आदि बनते है।

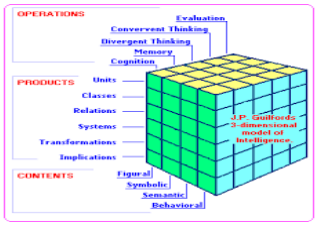


9. अस्तित्ववादी बुद्धि (Existential Intelligence) :- इस बुद्धि के व्यक्ति हर चीज के अस्तित्व के बारे में सोचते है। जैसे हम इस दुनिया में क्यों आये ? भगवान कौन है ?

➢ जिन व्यक्तियों में इनका विकास अधिक हो तो वे साधू संत और Philospher बनते है।

✦ **आलोचना –** Multiple intelligence theory को valid नहीं माना जा सकता क्योकि इसमें अलग-अलग Intelligence को माप नहीं सकते

➢ **त्रि आयामी सिद्धांत (THREE DIMENSIONAL THEORY) :- इस सिद्धांत का प्रतिपादन जे . पी . गिलफोर्ड ने किया है इस सिद्धांत को बुद्धि संरचना सिद्धांत भी कहते हैं गिलफोर्ड के अनुसार मानसिक योग्यता प्रमुख रूप से तीन तत्वों से निर्मित है विषय वस्तु (content) , संक्रियाएं (operation) तथा उत्पाद (product)!**



SACHIN ACADEMY

➢ **त्रि चापीय / त्रि घटकीय सिद्धांत (TRIARCHIC THEORY) :- इस सिद्धांत का प्रतिपादन स्टर्नबर्ग ने किया**

स्टर्नबर्ग ने बुद्धि को तीन भागो में बांटा है

1. अनुभवात्मक बुद्धि (Experiential Intelligence) :- अनुभवात्मक बुद्धि यह बुद्धि अनुभवों पर आधारित होती है व्यक्ति अपने अनुभवों से कुछ नयी खोज करता है अपने अनुभवों से कुछ नया create करता है

2. घटकीय बुद्धि (Componential Intelligence) :- घटकीय बुद्धि - घटकीय बुद्धि वाले व्यक्ति कल्पना शक्ति से ही बहुत कुछ सोच लेते है ये अमूर्त बुद्धि वाले व्यक्ति होते है , ऐसे लोग हर चीज के पीछे कारण जानना चाहते है

3. सन्दर्भात्मक बुद्धि (Contextual Intelligence) :- सन्दर्भात्मक बुद्धि व्यक्ति इसमें सूचनाओं को इस ढंग से उपयोग करने में सफल हो जाता है जिसको उसको अधिक से अधिक लाभ हो यह व्यक्ति पर्यावरण के साथ समायोजन रखते है और व्यावहारिक होते है

SACHIN ACADEMY

अधिगम (Learning)

अधिगम जन्म से लेकर मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया है व्यक्ति प्रत्येक परिस्थितियों से सीखता है और अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है यही सीखना है इसलिए हम कह सकते हैं परिस्थिति के अनुसार अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना ही सीखना है

Important Points

- सीखना अनुकूलन (adaptation) की प्रक्रिया है
- सीखना सार्वभौमिक (universal) प्रक्रिया है

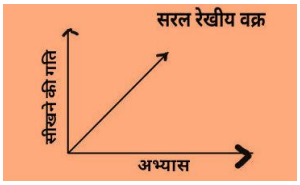
- सीखना व्यवहार में परिवर्तन है
- सीखना एक मानसिक प्रक्रिया (mental process) है
- school में अधिगम में परिवेश से सहभागिता द्वारा कौशलों और ज्ञान का अर्जन पर अधिक बल देना चाहिए
- सार्थक अधिगम meaningful learning में एक समस्या पर विविध तरीकों से विचार करने के लिए प्रोत्साहित Encouraging करना।
- अधिगम अधिक सार्थक और प्रभावशाली होता है अगर वह मुख्यतः स्व-निर्देशित Self-directed हो
- प्रारंभिक कक्षाओं में, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के लिए करके सीखना Learning by doing दृष्टिकोण बेहतर है
- अधिगम के लिए विद्यालय के सामाजिक अवसरों में भागीदारी महत्त्वपूर्ण है।
- अधिगम मुख्य रूप से एक सामाजिक क्रिया है।
- प्रभावी अधिगम के लिए शिक्षार्थी की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है।
- सार्थक अधिगम Meaningful learning में विश्लेषण, समालोचनात्मक सोच तथा समस्या-समाधान analysis, critical thinking and problem-solving की प्रक्रियाएं शामिल हैं।

अधिगम वक्र (Curves of Learning)

जब अधिगम की मात्रा, प्रभाव, क्षमता आदि को किसी माध्यम ग्राफ), आरेख etc) से प्रदर्शित किया जाता है तो वह अधिगम वक्र कहलाता है। इसमें अधिगम की न्यूनता या अधिकता या शून्य स्थिति व्यक्त की जाती है।

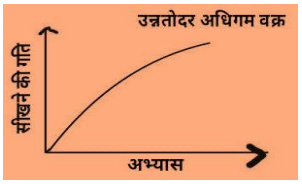
अधिगम वक्र के 4 प्रकार होते है -

(i) सरल रेखीय वक्र (Straight Line Curve) :- इसमें सीखने की गति एक समान होती है।

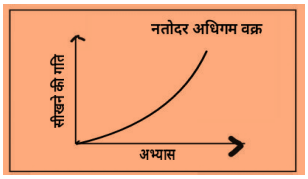


SACHIN ACADEMY

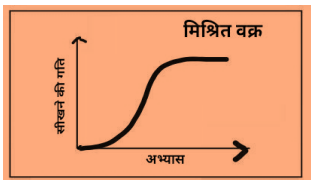
(ii) उन्नतोदर वक्र (Elevation Curve) :- इसमें सीखने की गति शुरू में तेज होती है और उच्चतम बिंदु पर पहुंचने के बाद सीखने की गति धीमी होना शुरू हो जाती है।



(iii) नतोदर अधिगम वक्र (Concave Learning Curve)-: इसमें शुरू में सीखने की गति धीमी हो जाती है उसके बाद धीरे धीरे सीखने की गति तेज होना शुरू होती है और वह उच्चतम स्तर की ओर बढ़ती है



(iii) मिश्रित अधिगम वक्र -: इसमें शुरू में अधिगम की गति तेज या धीमी और अंत में भी अधिगम की गति तेज या धीमी दोनों तरह से हो सकती है। यह वक्र वक्रों उन्नतोदर व नतोदर अधिगम वक्र का मिलाजुला रूप है।



अधिगम पठार (Learning Plateau)

अधिगम पठार (Learning Plateau) -: इसमें सीखने की गति रुक जाती है यानी उस में न तो उन्नति होती है और न अवनति। अधिगम का पठार में अधिगम की गति जीरो होती है।

SACHIN ACADEMY

शिक्षण के स्तर (Levels Of Teaching)

शिक्षण के स्तर को तीन स्तरों में बांटा गया है-:

1 . स्मृति स्तर (Memory Level) -: यह हर्बर्ट ने दिया था

- इस स्तर में बच्चे के रटने पर बल दिया जाता है
- ये शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का सबसे निचला स्तर है

- इस स्तर के शिक्षण अधिगम का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना है
- यह छोटी कक्षाओं के लिए होता है

2. समझ बोध स्तर /(Understaning Level) -:यह मोरिशन ने दिया था

- यह स्तर स्मृति स्तर से कुछ ऊंचा होता है
- इस तरह में रटने की बजाय ज्ञान को अच्छी तरह से समझने पर बल दिया जाता है
- इस स्तर में बच्चों को जो ज्ञान दिया जाता है या नियम या सिद्धांत बताए जाते हैं वो इस तरह से प्रदान किए जाते हैं ताकि बच्चा उनका व्यावहारिक प्रयोग भी कर सकें

3. चिंतन स्तर-:

- यह शिक्षण अधिगम का सबसे ऊंचा स्तर माना जाता है
- इस स्तर में बच्चों को अपनी मानसिक शक्तियों के विकास के पूर्ण अवसर प्राप्त होते हैं
- इसमें पहले बच्चों को विभिन्न नियमों सिद्धांतों आदि की जानकारी दी जाती है फिर उन्हें स्वतंत्र रूप से / इस पर चिंतन करने और निष्कर्ष निकालने के अवसर दिए जाते हैं

सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching)

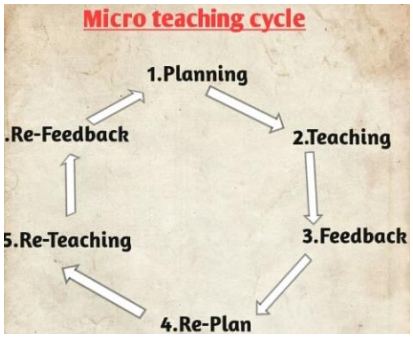
सूक्ष्म शिक्षण -:यह शिक्षण का छोटा सा प्रारूप है जिसमें Class में शिक्षण क्रियाएं सूक्ष्म रूप से कार्य करती है। सूक्ष्म शिक्षण विधि का विकास एलेन महोदय ने किया -

- सूक्ष्म शिक्षण से कम समय में अधिक दक्षता प्रदान किया जाता है।

SACHIN ACADEMY

- सूक्ष्म शिक्षण से शिक्षकों के कौशल का विकास किया जाता है जैसे -: श्यामपट कौशल, पुनर्बलन कौशल, प्रश्न प्रवाह कौशल

सूक्षम शिक्षण की प्रक्रिया



I. पाठयोजना निर्माण :- पहले टीचर पाठ्य योजना का निर्माण करेगा
II. कक्षा शिक्षण :- पाठयोजना बनाने के बाद टीचर क्लास में आकर पढ़ाएगा शिक्षण करवाने के लिए 6 मिनट का समय रिज़र्व होता है,
III. प्रतिपुष्टि :- फीडबैक देने के लिए भी 6 मिनट,
IV. पुनः पाठयोजना इसमें 12 मिनट
V. पुनः शिक्षण 6 मिनट
VI. पुनः प्रतिपुष्टि 6 मिनट

कुल = 36 मिनट

SACHIN ACADEMY

अधिगम स्थानांतरण (Transfer of Learning)

जब कोई एक सीखा हुआ कौशल / काम दूसरे सीखने के कौशल / काम को प्रभावित करता है तो उसे सीखने का स्थानांतरण कहते है जैसे:- ट्रक चलाने में सीखा गया कौशल कार चलाने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है।

स्थानांतरण के प्रकार

धनात्मक स्थानान्तरण :- धनात्मक स्थानान्तरण पूर्व ज्ञान, अनुभव अथवा प्रशिक्षण नई बातों को सिखाने में सहायता प्रदान करता है।

किसी कार्य को करने का ज्ञान, योग्यता अथवा अनुभव जब अन्य कार्यों को करने में सहायक होता है तब इसे सीखने का धनात्मक स्थानान्तरण माना जाता है।

जैसे :- हिंदी भाषा का ज्ञान संस्कृत भाषा सीखने में सहायता प्रदान करने के कारण धनात्मक स्थानान्तर कहलाएगा

ऋणात्मक स्थानान्तरण :- किसी कार्य को करने का ज्ञान, योग्यता अथवा अनुभव जब दूसरे कार्य को करने में घातक होता है। तब इसे सीखने ऋणात्मक स्थानान्तरण कहा जाता है।

जैसे :- तेज चलने का अभ्यास दिल की बीमारी की स्थिति में चिकित्सक की सलाह के बावजूद धीमे चलने में बाधक होता है अतः इसे ऋणात्मक स्थानान्तरण कहा जाएगा।

शून्य स्थानांतरण :- सीखने की प्रक्रिया में जब पूर्व अनुभव ना तो सहायक होता है ना ही बाधक होता है तो वहां पर अधिगम का शून्य स्थानांतरण पाया जाता

क्षैतिज स्थानान्तरण :- जब किसी स्तर में अर्जित ज्ञान, अनुभव अथवा प्रशिक्षण का उपयोग व्यक्ति के द्वारा उसी प्रकार की लगभग समान स्थित में किया जाता है, तो इसे सीखने का क्षैतिज स्थानान्तरण कहते हैं। गणित में जोड़ घटाने के प्रश्नों को हल करने का अभ्यास उसी तरह के विज्ञान के अन्य प्रश्नों को हल करने में काम आता है।

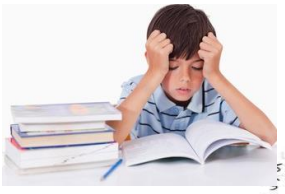
SACHIN ACADEMY

LEARNING DISABILITIES

अधिगम अक्षमता

सिखने की क्षमता या योग्यता में कमी को अधिगम अक्षमता कहते है । एक चर अवस्था (variable stage) है

1. DYSLEXIA → पढ़ने से सम्बंधित कठिनाई



2. DYSGRAPHIA → लिखने से सम्बंधित कठिनाई



3. DYSCALCULIA → गणितीय गणना से सम्बंधित समस्या



4. DYSMORPHIA → भ्रम वाली स्थिति







5. DYSPHASIA → बोलने से सम्बंधित विकार

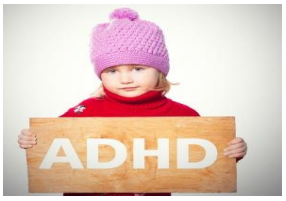


6. DYSPRAXIA → शारीरिक कौशल से सम्बंधित विकार

7. DYSTHEMIA → तनाव से सम्बंधित



SACHIN ACADEMY



✦**ADHD (attention deficit hyperactive disorder) :-** इसमें बच्चा एक चीज़ पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाता और बहुत hyper active होता है।



✦**स्वलीनता / आत्मकेंद्रिता Autism -** दोहराव **repetitive** और बार बार किये जाने वाला व्यवहार **behaviour**, autism कहलाता है । यह दिव्यांगता सामाजिक संचार **social communication** में चुनौतियों का कारण बनती है



✦**RPWD act 2016 -** RPWD एक्ट 1995 के स्थान पर pwd act 2016 लाया गया। पीडब्ल्यूडी एक्ट 2016 में पीडब्ल्यूडी एक्ट 1995 में मौजूदा विकलांगता के 7 प्रकारों से बढ़कर 21 प्रकार कर दिए गए और साथ ही यह भी सुनिश्चित कर दिया गया कि केंद्र सरकार के पास और विकलांगता के प्रकार जोड़ने की शक्ति भी होगी।

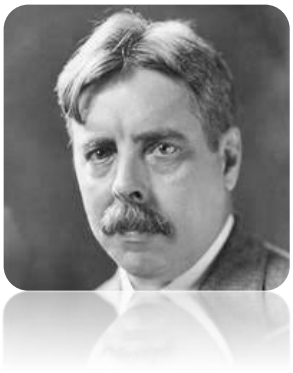
इसके द्वारा सुझाई गई युक्तियाँ



- जीवन से सभी क्षेत्रों में समानता और गैर भेदभाव
- स्कूल जाने वाले बच्चो का हर 5 साल में सर्वे करना
- books, TLM, आदि उपलब्ध कराना

✦**गामक / गतिमान अक्षमता (Locomotor disability) -** यह क्षमता "शारीरिक अक्षमता या muscles का सही तरीके से नहीं चलना" से संबंधित होती है जैसे चलना, कूदना, हाथ में कोई वस्तु ना पकड़ पाने की अक्षमता आदि।

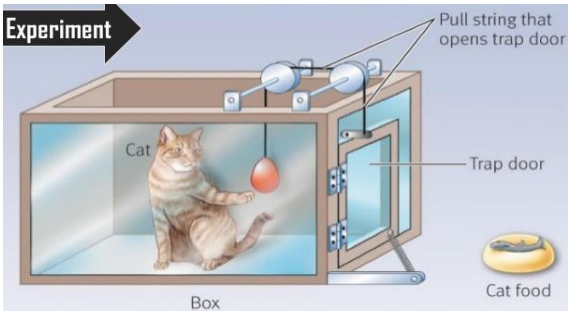
ई. एल. थार्नडाइक



(त्रुटि एवं प्रयास का सिद्धांत/ Trial and Error theory)

- थार्नडाइक एक अमेरिकी वैज्ञानिक थे
- थार्नडाइक ने प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धांत दिया, वो सोचते थे कि अगर किसी की उत्तेजना (stimulus) बढ़ा दे तो वह उसके प्रति अनुक्रिया (response) करेगा और वह जब बार - बार अनुक्रिया को दोहराएगा तो वह कुछ ना कुछ सीखेगा

प्रयोग:- थार्नडाइक ने एक पिंजरे में भूखी बिल्ली को बंद कर दिया और बाहर एक मरी मछली रख दी पिंजरे में एक लीवर लगा होता है जिस पर पैर पड़ने पर गेट खुल जाता है बिल्ली भूख के मारे छटपटाती हैं इधर-उधर घूमती है और अचानक उसका पैर उस लीवर पर पड़ जाता है और गेट खुल जाता है और बिल्ली अपने लक्ष्य (मृत मछली) तक पहुंच जाती है

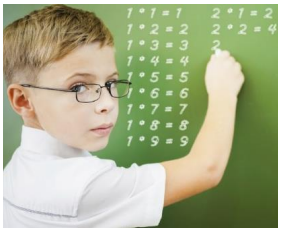


- यह प्रयोग (सिद्धांत) यह बताता है कि जब हम प्रयास करेंगे तो त्रुटियां होंगी लेकिन अंत में हम अपने लक्ष्य तक पहुंच जाएंगे यानी सीख जाएंगे

थार्नडाइक ने 2 नियम दिए

1. मुख्य नियम

2. गौण नियम

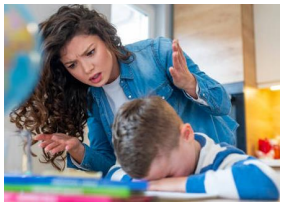


प्राथमिक नियम (Primary Law)

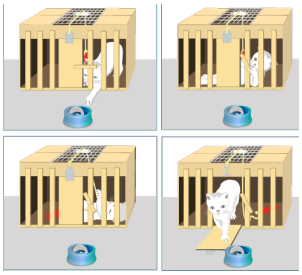
- **अभ्यास का नियम (LAW OF Excercise) :-** यह नियम बताता है कि किसी काम का हम जितना अभ्यास करेंगे, उसे उतना ज्यादा ही सीखेंगे।



- **तत्परता का नियम (LAW OF READINESS) :-** यह नियम बताता है कि किसी काम को करने के लिए हम जितने तत्तपर रहेंगे, उसे उतना जल्दी ही सीखेंगे
- **प्रभाव का नियम (LAW OF EFFECT) :-** यह नियम यह बताता है कि यदि सीखना **संतोषजनक** हो तो सीखना तीव्र हो जाता है यदि सीखना असंतोष जनक है तो सीखना संभव नहीं होता थार्नडाइक ने इस नियम में **पुरस्कार** और **दंड** को महत्व दिया



गौण नियम (Secondary Laws)

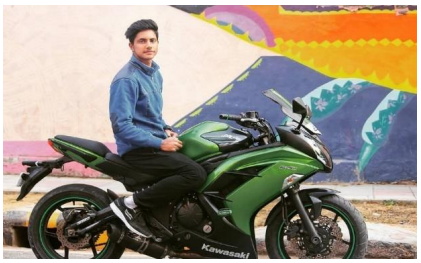


1. **बहु प्रतिक्रिया का नियम (LAW OF MULTIPLE RESPONSE) :-** इस नियम के अनुसार हम नया कार्य सीखते समय अनेक प्रतिक्रियाएं एवं प्रयास करते हैं तथा उसके बाद उस कार्य को करने की सही विधि मालूम हो जाती है

2. आंशिक क्रिया का नियम (LAW OF PARTIAL ACTION) :- इस नियम के अनुसार हम अपने पूरे कार्य को छोटे-छोटे भागों में विभाजित करके करें तो यह अधिक शीघ्र और सरल हो जाता है

3. आत्मीकरण का नियम (LAW OF ASSIMILATION) :- इस नियम के अनुसार हम नवीन (नए) ज्ञान को अपने पूर्व (पुराने) ज्ञान के साथ जोड़कर इसे स्थाई बना लेते हैं इससे अधिगम अधिक सुगम और सरल हो जाता है





4. मनोवृति/ अभिवृत्ति का नियम (LAW OF Disposition) :- यह नियम हमें यह बताता है कि किसी भी काम को करने के लिए जितनी हमारी Positive अभिवृत्ति होगी उतना ही ज्यादा उस काम को सीखेंगे और अगर अभिवृत्ति कम हुई तो उस काम को कम सीखेंगे।



5. सहचर्य क्रिया का नियम (LAW OF ASSOCIATIVE SHIFTING) :- इस नियम का अभिप्राय है पहले की गई क्रिया को अन्य परिस्थिति में भी उसी प्रकार करना

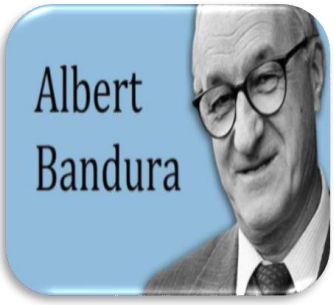


ERRORS

- बच्चो के error उनके सिखने के process का एक part है
- ये बच्चो की thinking को समझने में एक resource का काम करती है
- Students की errors संकेत (indicate) करती है की उन्हें यांत्रिक अभ्यास (mechanical drill) की जरुरत है



अल्बर्ट बंडूरा सामाजिक अधिगम सिद्धांत
(Social learning Theory)



- **अल्बर्ट बंडूरा** कनाडा के निवासी हैं और उन्होंने सामाजिक अधिगम का सिद्धांत दिय
- इस सिद्धांत में दूसरों के व्यवहार को देखकर सीखा जाता है समाज के मान्य व्यवहार को अपनाया जाता है तथा अमान्य व्यवहार को नकारा जाता है

SACHIN ACADEMY

इस सिद्धांत को अन्य नामों से भी जाना जाता है

1. अवलोकनात्मक अधिगम का सिद्धांत (Observation learning Theory)

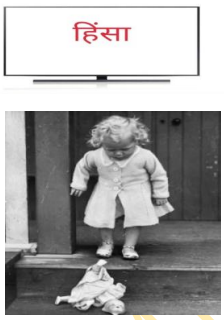
2. अनुकरण करना (Imitation)

3. Modelling

इनके प्रयोग अल्बर्ट बंडूरा ने बोबो डॉल पर प्रयोग किया इसमें इन्होंने बच्चे को 3 फिल्म दिखाई







बंडूरा के According, stages of learning

1. **Attention** **अवधान**
2. **Retention** **धारण**
3. **Reproduction** **पुनर्रउत्पादन**
4. **Motivation** **अभिप्रेरणा**



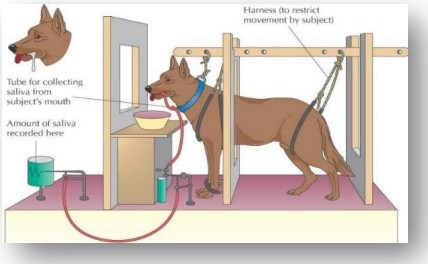
PAVLAW THEORY OF CLASSICAL CONDITIONING

पावलॉव सिद्धांत (शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत)

IP पावलॉव :- यह एक रूसी वैज्ञानिक थे

- इनको 1904 में नोबेल पुरस्कार मिला
- इनके अनुसार किसी की उत्तेजना के parellel अगर कोई signal निर्धारित कर दे तो वह सामान प्रतिक्रिया (response) करेगा, जितना वह उत्तेजना बढ़ाने पर करता थ

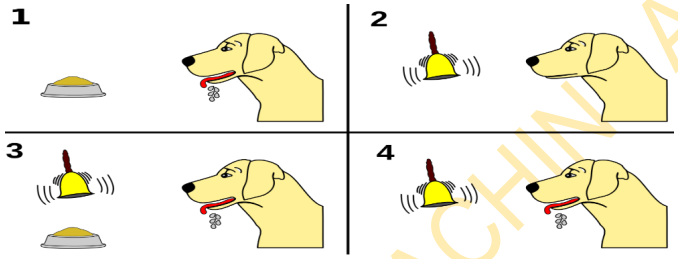
पावलॉव ने कुत्ते पर प्रयोग किया



पावलॉव ने अपना प्रयोग कुत्ते पर किया, उसने कुत्ते को एक पिंजरे में भूखा रखा अब उसने उसे खाना दिया, खाना देखते ही कुत्ते के मुँह से लार टपकनी शुरू हो गयी, जब वह कुत्ते को खाना देता था तो खाना देने से पहले वह एक घंटी बजा देता था। कुछ दिन बाद कुत्ते को लगने लगा की जब घंटी बजेगी तभी खाना मिलेगा अब जैसे ही घंटी बजती थी तो कुत्ते के मुँह से लार टपकनी शुरू हो जाती, अब उत्तेजना बढ़ाने का काम घंटी कर रही है इस तरह कुत्ता घंटी के साथ सम्बन्ध स्थापित कर लेता है

Food **Bell**

Unconditioned Stimulus **Conditioned Stimulus**



लार **लार**

Unconditioned Response **Conditioned Response**

SACHIN ACADEMY

Stages of Classical Conditioning

1. उद्दीपक सामनीयकरण (Stimulus Generalization) :- जब व्यक्ति Unconditional Stimulus के प्रति

क्रिया सीख लेता है तो वह उस उद्दीपन से मिलते - जुलते अन्य उद्दीपनों के प्रति भी वैसे ही Response करता है। जैसे - अलग - अलग घंटियों की आवाज़ आने पर भी कुत्ता लार टपका शुरू कर देता है

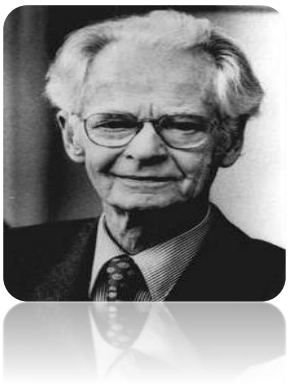
2. विलोपन (Extinction) :- अगर Conditioned Stimulus के बाद Unconditioned Stimulus प्रदान न करे तो कुछ समय बाद Response आना बंद हो जाता है। जैसे - घंटी की आवाज़ के बाद अगर खाना न दिया जाए तो कुत्ते की लार आना बंद हो जाएगी

3. विभेद (Discrimination) :- इसमें व्यक्ति Original Unconditional Stimulus और other Stimulus के बीच विभेद या अंतर् करना शुरू कर देता है। जैसे - बहुत सारी घंटिया बजने के बावजूद कुत्ता यह पहचान जाता है कि किस घंटी की आवाज़ के बाद खाना मिलेगा।

SACHIN ACADEMY

बी. एफ. स्किनर का क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत

(Operant Conditioning Theory)

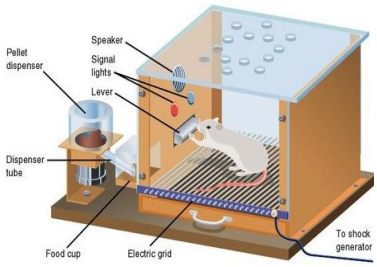


- इस सिद्धांत का प्रतिपादन अमेरिका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बी.एफ. स्किनर द्वारा किया गया
- बी.एफ. स्किनर ने सबसे अधिक अनुक्रिया (Response) पर जोर दिया
- इसलिए इसे क्रिया प्रसूत अनुबंधन का सिद्धांत कहा जाता है

बीएफ स्किनर ने अपना प्रयोग पहले चूहे पर उसके बाद कबूतर पर किया

इन्होंने एक बॉक्स लिया और उसमें एक चूहा बंद कर दिया बॉक्स में एक लीवर लगा हुआ था उसमें एक छिद्र था जब लीवर दबता तब खाना आ जाता था उस छिद्र के द्वारा जब चूहे को भूख लगी तो वह इधर-उधर घूमने लगा अचानक उसका पैर

लीवर में लगा और उसके लिए उस छिद्र से खाना आ गया इसके बाद उसने इस क्रिया को दोहराया और खाना दोबारा आ गया है इसमें चूहा जब भी प्रतिक्रिया करता तो उसको खाना मिल जाता इसे ही क्रिया प्रसूत का अनुबंधन सिद्धांत कहते हैं



- इस प्रयोग से यह निष्कर्ष निकलता है कि पहले **अनुक्रिया (Response)** होती है बाद में **उद्दीपन (Stimulus)** मिलता है जैसे जैसे **पुनर्बलन (Reinforcement)** मिलता है वैसे वैसे सही अनुक्रिया करने और लक्ष्य तक पहुंचने की प्रक्रिया में तीव्रता आती है सीखने की अनुक्रिया में पुनर्बलन (Reinforcement) का विशेष महत्व होता है

पुनर्बलन (Reinforcement) :- जिस उद्दीपक को देने से अनुक्रिया करने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं पुनर्बलन कहलाता है, जैसे - पेपर पास करने पर parents द्वारा cycle या mobile देना

पुनर्बलन दो प्रकार का होता है

1. सकारात्मक पुनर्बलन (positive reinforcement) :- जैसे - भोजन, पानी, नौकरी, प्रशंसा आदि।

2. नकारात्मक पुनर्बलन (negative reinforcement) :- जैसे - दण्ड देना, मना करना या डाटना आदि ।

- प्राणी को यदि सकारात्मक पुनर्बलन दिया जाता है तो प्राणी क्रिया को दोहराता है और यदि नकारात्मक पुनर्बलन दिया जाता है तो प्राणी क्रिया को नहीं दोहराता

पुनर्बलन अनुसूची

यह दो प्रकार की होती है –

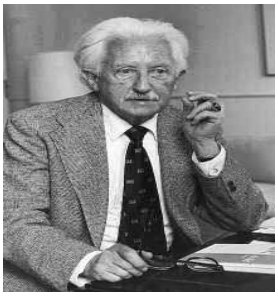
1. सतत पुनर्बलन अनुसूची (Continous Reinforcement Schedule) :- इसमें जब-जब क्रिया होती है तो

SACHIN ACADEMY

पुनर्बलन दिया जाता है, जैसे - प्रत्येक सवाल हल करने पर बच्चे की तारीफ करना

2. आंशिक पुनर्बलन अनुसूची (Partial Reinforcement Schedule) :- इसमें हर क्रिया के लिए पुनर्बलन नहीं दिया जाता बल्कि कुछ क्रियाओ के लिए दिया जाता है, जैसे - सभी सवालो की जगह सिर्फ कुछ सवालो पर तारीफ करना

मनोसामाजिक सिद्धांत
(Psycho - Social Dvelopment)



यह सिद्धांत इरिक ऐरिक्सन (**Eric Erickson's**) द्वारा प्रतिपादित किया गया है। इनका मुख्य उद्देश्य बच्चो में व्यक्तिगत पहचान कैसे होती है उस पर था। इनके **according** पूरा जीवन **8 step** से होकर गुजरता है।

(1) विशवास बनाम अविशवास (Trust Vs Mistrust) [0 - 1.5/2 वर्ष] जिन बच्चो को माता- पिता से प्यार आदि मिलता है, उनमें विशवास का भाव विकसित होता है। दूसरी तरफ जिन बच्चो को माता- पिता का प्यार आदि नहीं मिलता तो वह रोना बिलखना शुरू कर देते है। इस क्रिया से बच्चो में अविशवास उत्तपन होना शुरू हो जाता है।





(2) स्वायता बनाम शर्म /लज्जा शक (Autonomy vs Shame /Doubt) [1 5 / 2 - 3 वर्ष]

स्वायता का अर्थ है ' स्वयं ' से अर्थात जब बच्चे खुद से खाना, कपडा पहनना ज्यादा पसंद करने लगते है। वे अब दूसरो पर निर्भर रहना नही चाहते है तो यह स्वायता कहलाता है। दूसरी और बहुत ही सख्त माता- पिता जब काम करने पर डांटते है तो वे बच्चे अपने ही अंदर शक का अनुभव करते है।

SACHIN ACADEMY

(3) पहल बनाम / दोष (Initiative vs Guilt) [3 - 6 वर्ष]




जब बच्चे में समझने की क्षमता का थोड़ा विकास हो जाता है तो उसमे जिज्ञासा (Curiosity) बढ़ जाती है। वह बहुत ज्यादा उत्सुक हो जाता है। उत्सुक होने की वजह से वेह पहल करता है। दूसरी तरफ जब माँ- बाप उसकी उत्सुकता को दबा देते है या उसे डाँट देते है तो दोष भाव (Guilt feeling) उत्पन होना शुरू हो जाता है।

(4) परिश्रम बनाम हीनता (Industry vs Inferiority) [6 -12 वर्ष] [उत्तरबाल्य अवस्था]



इस आयु में बच्चा माँ- बाप का हर काम करने की कौशिश करता है। अतः इसे परिश्रम कहते है। दूसरी तरफ अगर आपने बच्चे को कोई काम दिया और उस बच्चे की काम करने की क्षमता कम है तो वह उस काम को नही कर पायेगा इसलिए उसमे हीनता आनी शुरू हो जाती है।

(5) पहचान बनाम भ्रान्ति (Identity vs Confusion) [12-18 वर्ष] [किशोर अवस्था]



इस आयु में बच्चो में अपनी पहचान बनाने की बहुत ज्यादा उत्सुकता होती है। दूसरी तरफ जब बच्चे उद्देश्यपूर्ण काम नही करते तो उनके पास बहुत सारे रास्ते खुल जाते है।

(6) आत्मीयता बनाम अलगाव (Intimacy vs isolation) [18-35] [पूर्व व्यस्कावस्था]



आत्मीयता में आदमी दूसरो के साथ धनिष्ट सम्बन्ध बनता है। धनिष्ट सम्बन्ध होने की वजह से वह दूसरो के साथ मिल-जुल कर रहता है जिसे आत्मीयता कहते है। दूसरी तरफ जब आदमी दूसरो

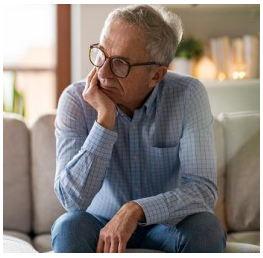
SACHIN ACADEMY

के साथ धनिष्ट सम्बन्ध नहीं बना पाता तो वह सबसे अलग रहता है। जिसे अलगाव कहते हैं।

(7) जननात्मकता बनाम स्थिरता (Generativity vs Stagnation) [35-65] [मध्य-व्यस्कावस्था]

जननात्मकता में हम दूसरे लोगो के बारे में ज्यादा सोचते है, दूसरो का भला करने की सोचते है, दूसरी तरफ-जब लोगो में इस सोच का विकास नही होता तो उनमें स्थिरता आ जाती है।

(8) सम्पूर्णता बनाम निराशा (Integrity vs Despair) [65 से ऊपर] [प्रोढ़ावस्ता]



इस उम्र में आदमी की अधिकतम इच्छाएँ पूर्ण हो चुकी होती है। वह अब अपने भविष्ये की बजाये अपने बीते दिनों को याद करता है कि उसकी कितनी सफलताएँ हुई और कितनी असफ़लताएँ हुई। यदि उसकी सफलताएँ ज्यादा मिलती है तो उसे सम्पूर्णता कहते है। अगर किसी ने ज्यादा सफलताएँ हासिल नही कि है तो उसमे निराशा आ जाती है।

SACHIN ACADEMY



जीन पियाजे

संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत

Cognitive Deveopment Theory

- **जीन पियाजे स्विट्ज़रलैंड के मनोवैज्ञानिक थे।**
- **पियाजे का मानना है की जैसे-2 बच्चो में जैविक परिपक्वता (Biological Maturation) आती है वैसे-2 वह वस्तुओ के बारे में अपने दिमाग में concept बना लेते है।**

➡ **पियाजे के according बच्चे सक्रिय ज्ञान - निर्माता तथा नन्हे वैज्ञानिक है जो संसार के बारे में अपने सिद्धांतो की**

रचना करते है।

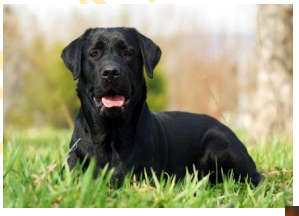
➡ पियाजे के according बच्चो की thinking, adult से प्रकार (types) में अलग होती है ना की quantity में।

Concept of Cognitive Development

1. अनुकूलन (Adaptation) :- वातावरण के अनुसार अपने आप को ढालना अनुकूलन कहलाता है। इसकी दो प्रक्रिया होती है।

(i) आत्मसात्करण (Assimilation) :- पूर्व ज्ञान को नए ज्ञान के साथ जोड़ना आत्मसात्करण कहलाता है।

Example:




(ii) समायोजन (Accommodation) :- पूर्व ज्ञान में परिवर्तन करके वातावरण के साथ तालमेल बिठाना समायोजन कहलाता है।

Example:



साम्यधारण / संतुलन (Equilibration) :- इसके द्वारा बच्चा आत्मसात्करण और समायोजन की प्रक्रियाओ के बीच संतुलन कायम करता है

स्कीमा (Schema) :- मानव के दिमाग में जो चीज़े पहले से स्टोर होती है वह उनका प्रयोग करके किसी विषय के प्रति एक धारना बनाता है तो इसे स्कीमा कहते है । मानव शिशु में स्कीमा प्रवृत्ति और प्रतिक्रिया जन्म जात होती है।

SACHIN ACADEMY

Organisation (संगठन) :- पियाजे के सिद्धांत में संज्ञानात्मक प्रणाली के लिए स्कीमाओं को पुनर्व्यवस्थित करना, उन्हें स्कीमाओं से जोड़ने को संगठन कहा जाता है







पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाएं बताई है

1. संवेदी पेशीय अवस्था Sensory Motor Stage (0 - 2 वर्ष) :- इस अवस्था में बच्चा अपनी ज्ञानेन्द्रियो के माध्यम से सीखता है।



- **इसमें "वस्तुस्थायित्व" (Object Permanance) का गुण आ जाता है। यानी बच्चा अपने दिमाग में वस्तुओ की छाप बनाना शुरू कर देता है जिससे वह छिपी हुई वस्तु को भी ढूंढ लेता है।**

2. पूर्व - संक्रियात्मक अवस्था / Pre-Operational Stage (2 - 7 वर्ष) :- यह क्रिया करने से पहले की अवस्था है। इसमें बच्चा सामने आने वाली चीजों को देख पाएगा, समझ पाएगा, लेकिन कोई क्रिया नहीं कर पाएगा।

- इस **stage** में बच्चा प्रतीकों (**symbols**) का **use** करने में निपुण हो जाता है। जैसे **cycle** शब्द सुन कर उसके **mind** में **cycle** की एक **image** बन जाती है।
- **इस stage में लक्ष्य निर्देशित व्यवहार (gold directed behaviour) की क्षमता आ जाती है।**
  - **(i) जीववाद (Animism) :- जब बच्चा सजीव और निर्जीव वस्तुओ में अंतर नहीं कर पाता**
  - **(ii) अहंकेंद्रित (Egocentrism) :- जब बच्चा यह सोचना शुरू कर देता है की जो वह कर रहा है , सोच रहा है , वह सब ठीक है।**

SACHIN ACADEMY





(iii) अपलटावी (Irreversibility) :- इसमें बच्चा वस्तुओ, संख्याओं, समस्या आदि को उलटना पलटना नहीं सीखता।

Eg :- 4 + 6 = 10
6 + 4 = ?

(iv) मुद्रा संप्रत्यय, दूरी , भार, ऊंचाई, क्रम निर्धारण की योग्यता आदि के concept की कमी इसी अवस्था में होती है।







(v) केन्द्रीकरण (centration) :- एक समय में किसी वस्तु की केवल एक विशेषता पर ध्यान दे पाने की प्रवृत्ति को centration कहते है।



(vi) संरक्षण (conservation) - अगर किसी वस्तु के size या shape में change करदे तो उसकी quantity **पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन बच्चा इसको समझ नहीं पाता।**

(vii) क्रमबद्धता (seriation) - इसमें बच्चा वस्तुओ / तथ्यों को उनके आकार में रखना नहीं सीख पाता है।

SACHIN ACADEMY

3. मूर्त संक्रियात्मक अवस्था / concrete operational stage (7 - 11) :- इस अवस्था में बच्चा सामने रखी हुई चीजों को देखकर ही कुछ कर सकता है या उन पर चिंतन करना शरू कर देता है।

- इस अवस्था में अपलटावी, जीववाद, मुद्रा, भार, संरक्षण, क्रमबद्धता की योग्यता आदि concept का गुण आ जाता है।

- आगमनात्मक तर्कणा (hypothetical thinking) :- यह भी इसी अवस्था में आता है। यानी जब बच्चा उदाहरण के ऊपर आधारित होकर तर्क करने लगता है।

Eg: पेड़ जरुरी है या नहीं हमारे लिए बच्चा answer क्योकि इससे हमें oxygen मिलती है।



4. औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11-15 वर्ष) Formal Operational Stage :-

यह संज्ञान की सर्वोच्च अवस्था है।

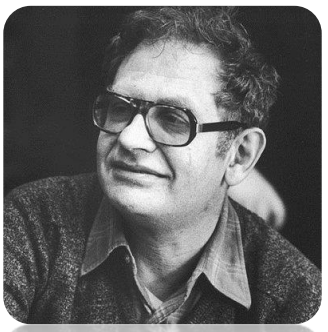
- इसमें बच्चा अमूर्त चिंतन करने लग जाता है।
- निगमनात्मक तर्कणा :- इसमें बच्चा नियमो के ऊपर तर्क करने लगता है।

- पियाजे के सिद्धांत की आलोचना - पियाजे ने मानसिक विकास के चरणों के क्रम को अपरिवर्तनशील बताया है लेकिन
- अगर बच्चो को अच्छा वातावरण दिया जाये तो वह अपनी अवस्था की क्षमता से अधिक सीख सकता है

SACHIN ACADEMY

लॉरेंस कोहलबर्ग का नैतिकता का सिद्धांत

Moral Developement Theory



- कोहलबर्ग अमेरिका के एक मनोवैज्ञानिक थे , जिन्होंने नैतिकता का सिद्धांत या नैतिक विकास का सिद्धांत दिया।

- नैतिकता (Morality):- यह वह गुण है जिससे हमें सही और गलत की पहचान होती है। बच्चा अपने सामाजिक परिवेश से ही नैतिकता और अनैतिकता को जानता है।



हिंज की कहानी

(i) नैतिक दुविधा (Moral Dilemma) :- सही और गलत के बारे में decision ना लेने की स्थिति नैतिक दुविधा कहलाती है

Ex : हिंज अगर चोरी करेगा तो पुलिस पकड़ लेगी और नहीं करेगा तो उसकी बीवी मर जाएगी ।





(ii) नैतिक तर्कणा (Moral Reasoning) :- सही और गलत के बारे में decision लेने में शामिल प्रक्रिया को नैतिक तर्कणा कहते है। सही और गलत में से किसी एक को चुनना जैसे हिंज ने चोरी को चुना

कोहलबर्ग ने नैतिकता के 3 Level बताए है-



(1) प्राक रूढ़िगत नैतिकता का स्तर / Pre Conventional Stage (4 - 10 वर्ष) :- इस अवस्था में बच्चो को **सही गलत** के बारे में पता नहीं होता। इस अवस्था में नैतिक तर्कणा दूसरे लोगो के मानकों के अनुसार होती है।

इसे दो भागो में बांटा है-



(i) दंड एवं आज्ञा - पालन उन्मुखता (Punishment & Obedience) :- इसमें बच्चे की नैतिकता सजा और आज्ञा पालन पर आधारित होती है। जब हिंज ने चोरी की तो बच्चो ने सोचा की अगर वह चोरी करेगा तो उसे सजा मिलेगी

(ii) साधनात्मक सापेक्षता तथा उन्मुखता (Instrumental Relativists individualism) :- इस अवस्था को **"जैसे को तैसे"** भी कहा जाता है क्योकि इसमें जैसा



व्यवहार कोई उसके साथ करेगा वैसा ही वह खुद भी करेगा।

Ex : एक बच्चे ने दूसरे बच्चे की पेंसिल तोड़ी तो दूसरे बच्चे ने भी उसका पेन तोड़ दिया ।

(2) रूढ़िगत नैतिकता का स्तर (Conventional Stage) [10 - 13 वर्ष] :- इस अवस्था में बच्चा दूसरे लोगो के मानकों को अपने अंदर समावेशित कर लेता है तथा उसी के according सही / गलत का निर्णय करता है।

SACHIN ACADEMY

इसको भी दो भागो में बांटा है-





(i) अच्छा लड़का / लड़की बनने की उन्मुखता (Good boy and Good girl) :- दुसरो के साथ भला बन कर अनुमोदन अर्जित (earns approval) करता है।



(ii) कानून एवं व्यवस्था उन्मुखता (Law and Order Orientation):- इसमें बच्चा कानून तथा सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने की भावना विकसित करता है।क्योकि उसके पापा का accident हो गया था, Red Light पार करते हुए इसलिए वह ऐसा नहीं करेगा।

(3) उत्तर रूढ़िगत नैतिकता (Post Conventional Stage) [13 वर्ष से ऊपर] :-

इसमें decision खुद से लिए जाते है ना की समाज के जरिये, की क्या सही है और क्या गलत।

इसकी दो अवस्थाएं है।

(i) सामाजिक अनुबंध उन्मुखता (Social Contract Orientation) :- इसमें किशोर यह मानते है कि नियम लोगो कि भले के लिए है, अगर किसी नियम से किसी का नुकसान होता है तो ऐसे नियमो को तोड़ देना चाहिए। अगर red Light तोड़कर उसके पापा कि जान बच सकती है तो उसे तोड़ दो।



(ii) सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत उन्मुखता (Universal Ethical Principles Orientation) :- इसमें किशोर दुसरो के विचारो से नहीं बल्कि अपने खुद के मानकों के अनुसार व्यवहार करता है। इसमें किशोर दुसरो के फायदों के लिए अपनी जान पर भी खेल जाते है

SACHIN ACADEMY

- कोहलबर्ग के सिद्धांत की आलोचना इनके सिद्धांत की आलोचना कैरोल गिलिगन ने की थी , उन्होंने तर्क दिया की कोहलबर्ग ने अपने experiment में महिलाओ को कम प्राथमिकता दी थी।
- male & female की moral reasoning में culture के differences को importance नहीं दी ।



वाइगोत्स्की का सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत

(Social Cultural Theory)

- लेव वाइगोत्स्की एक रूसी मनोवैज्ञानिक थे, जिन्होंने सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत का प्रतिपादन किया।
- यह सिद्धांत बताता है कि बच्चा अपने समाज और संस्कृति से अंत: क्रिया (Interaction) करके सीखता है यानी सामाजिक अंत: क्रिया के बाद विकास होता है। जबकि पियाजे यह मानते थे कि पहले विकास होता है, बाद में अधिगम (Learning)



वाइगोत्स्की के दो महत्वपूर्ण Concept

(i) ZPD (Zone Proximal Development) / समीपस्थ / निकट विकास का क्षेत्र" :- वास्तविक विकास (real development) के स्तर "तथा संभावित विकास (potential development) के स्तर के बीच के अंतर को समीपस्थ विकास का क्षेत्र कहा जाता है।



(ii) Scaffolding (पाड़ / ढांचा) :- व्यस्को द्वारा दी जाने वाली Temporary help या Guidence को Scaffolding (पाड़ / ढांचा (कहते है।

SACHIN ACADEMY

MKO ➡ More Knowledgable other ➡ Teacher, Parents, Friend etc

भाषा पर इनके विचार -

- इनके अनुसार भाषा और चिंतन शुरू में अलग अलग होते है लेकिन बाद मे एक साथ हो जाते है
- वयगोत्स्की ने कहा की पहले भाषा आती है बाद मे विचार
- भाषा संज्ञानत्मक विकास को सुगम (facilitate) बनाती है
- निजी भाषण / आंतरिक भाषा (private speech) :- इसमें बच्चा अपने ही कार्यो को निर्देश देने के लिए भाषा का उपयोग करते है

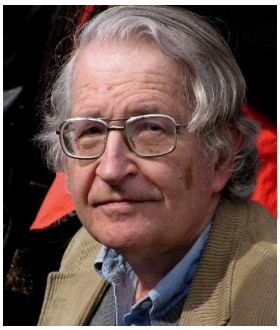


SACHIN ACADEMY

नोम चॉमस्की

भाषा विकास का सिद्धांत

Inborn Theory



- ये अमेरिका के रहने वाले थे।
- इनका मानना है की बच्चे में भाषा सिखने की जन्मजात (Innate) क्षमता होती है।
- ये कहते है की बच्चे के मस्तिष्क (mind) में एक Device होता है जिससे बच्चा भाषा सीखता है।

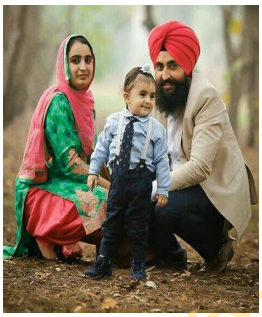
Device → L A D

Language Aquisition Device

भाषा अधिग्रह यंत्र

Example:







➢ इन्होने सार्वभौमिक व्याकरण (Universal Grammar) का सिद्धांत दिया यानि Grammar जन्मजात होता है।

चॉमस्की ने भाषा के दो level बताए है

(i) सतही संरचना (Surface level) :- इसमें बच्चा सिर्फ ध्वनियों / शब्दों को जनता है लेकिन उनके अर्थ नहीं जानता।

Ex : मम्मी , पापा, खाना, पीना , आदि

(ii) गहरी संरचना (Deep level) :- इसमें शब्दों के अर्थ का ज्ञान होता है।

SACHIN ACADEMY

Bloom's Taxonomy of Educational Objective



बेंजामिन ब्लूम यह अमेरिका के निवासी थे। इन्होने शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण किया था।

(i) ज्ञानात्मक पक्ष (cognitive domain)

(ii) भावात्मक पक्ष (affective domain)

(iii) क्रियात्मक पक्ष (psychomotor domain)

1. ज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Domain)

- इसका वर्गीकरण ब्लूम ने 1956 में किया था। यह मानसिक क्षमताओं से सम्बंधित होता है। इसके उद्देश्य को सरल से कठिन और शिक्षण अधिगम के निम्न स्तर (low level) से ऊचें स्तर (high level) तक ले जाने के दृष्टिकोण को 6 भागो में बाटा हुआ है।

(i) ज्ञान (Knowledge)

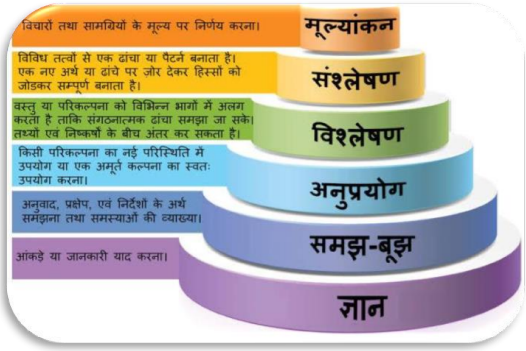
(ii) बोध (Comprehension)

(iii) अनुप्रयोग (Application)

(iv) विश्लेषण (Analysis)

(v) संश्लेषण (synthesis)

(vi) मूल्यांकन (evaluation)



2. भावात्मक पक्ष (Affective Domain)

- इसमें वे तरीके शामिल होते है जिनसे हम भावनात्मक रूप से सामना करते है। जैसे- तारीफ़, उत्साह, प्रेरणा आदि।

SACHIN ACADEMY

3. क्रियात्मक पक्ष (Psychomotor Domain)

- इसमें शारीरिक हलचल, motor skills के क्षेत्र आदि शामिल होते है।

बाल केंद्रित शिक्षा तथा प्रगतिशील शिक्षा
(Child centered and Progressive Education)

SACHIN ACADEMY

बाल केंद्रित शिक्षा (Child Central Education)



बाल केंद्रित शिक्षा के समर्थक 'जॉन डीवी '(Jonn Dewey) थे। बाल केंद्रित शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जिसमे हम बच्चो को केंद्र बिंदु मानकर शिक्षा प्रदान करते है। बाल केंद्रित शिक्षा के अंतर्गत बालक की रूचियो (Interest), प्रवृतियों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रदान की जाती है। जब हम बच्चो को बाल केंद्रित शिक्षा प्रदान करते है तो शिक्षण रुचिकर होता है।

प्रगतिशील शिक्षा (Progressive Education)

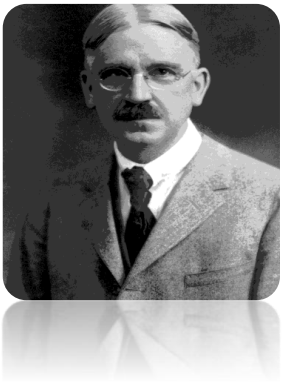
जब बच्चे को हम उसकी अभिवृतियों (Attitudes), इच्छाओ (Interests) के अनुसार पढ़ाते है तो उसका शिक्षा-स्तर बढ़ जाता है जिसे प्रगतिशील शिक्षा कहते है।

- प्रगतिशील शिक्षा के अनुसार शिक्षा बच्चे के लिए बनी है न कि बच्चा शिक्षा के लिए।
- प्रगतिशील शिक्षा से बच्चे का सर्वांगीण (all round) विकास होता है।
- प्रगतिशील शिक्षा 'करके सीखना' (learning by doing) प्रबल देती है।
- progressive education में seating arrangement, time table, flexible होना चाहिए।

- इसमें सहयोगिता पूर्ण अधिगम (**collaborative learning**) होता है।
- **according to CBSE - progressive education** में बच्चे समूह में **active participant** करे और **social skill** को सीखे।

प्रगतिशील शिक्षा में संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) के मनोवैज्ञानिक जॉन डीवी (Jonn Dewey) का योगदान है।

जॉन डीवी ने शिक्षा को त्रिध्रुवीय प्रणाली (Tripolar Process) बताया है।



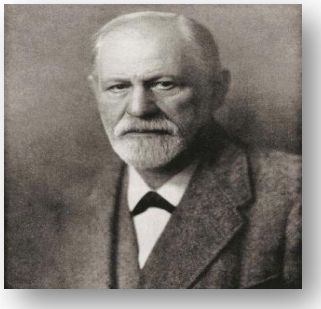
त्रिध्रुवीय प्रणाली (Tripolar Process)

Teacher — **स्वतंत्र चर (independent variable)**

बालक — **आश्रित चर (dependent variable)**

पाठ्यक्रम — **मध्यस्थ चर (intermediate variable)**

- **भारत में बाल केंद्रित शिक्षा का श्रेय ' गीजू भाई ' को दिया जाता है।**



सिगमंड फ्रायड

मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

(Psychoanalytic Theory)

इस सिद्धांत का प्रतिपादन सिगमंड फ्रायड ने किया था जो ऑस्ट्रिया के निवासी थे इस सिद्धांत में मन या मस्तिष्क का विश्लेषण किया जाता है

SACHIN ACADEMY

इन्होंने तीन type के मन बताएं

चेतन मन	अर्द्ध चेतन	अचेतन
(Conscious mind) (10%)	(Sub Conscious mind)	(UnConscious mind) (90%)
यह मन Present के विचारों से related होता है	इसमें हमें तुरंत ज्ञान नहीं होता लेकिन कुछ Time देकर याद किया जा सकता है	इसमें वे बातें होती है जो हम भूल चुके हैं और हमारे याद करने पर भी याद नहीं आती है

फ्रायड ने व्यक्तित्व (Personality) को तीन भागों में बांटा है



(i) Id (इदम्) :- इसमें व्यक्ति की शारीरिक और मूल आवश्यकताएं है जैसे भूख, प्यास, Sex आदि को Satisfied करना होता है यह सामाजिक आवश्यकताओं और नैतिक मूल्यों की चिंता किए बिना इच्छाओं की पूर्ति पर बल देता है

(ii) Ego (अहम) :- यह आवश्यकताओ या इच्छाओं की संतुष्टि की योजना का निर्माण करता है और उसका implementation करता है या परिणामों की चिंता करता है।



(iii) पराअहम् (Super Ego) :- यह समाज द्वारा नैतिक सूत्रों के According काम करता है यानी जिस व्यक्ति के अंदर Super Ego ज्यादा होगी वह बुरे कामों से उतना ही दूर होगा जैसे, चोरी ना करना या झूठ ना बोलना।

SACHIN ACADEMY



- **Oedipus complex :- इसमें लड़का अपनी माँ से ज्यादा प्यार करता है अपने पिता के मुकाबले**



- **Electra complex :- इसमें लड़की अपने पिता से ज्यादा प्यार करती है अपनी माँ के मुकाबले**



- **स्वमोह (Narcissism) :- इसमें व्यक्ति खुद से अबसे ज्यादा प्यार करता है।**

SACHIN ACADEMY

समायोजन (ADJUSTMENT)

समायोजन (ADJUSTMENT) :- परिस्तिथि के अनुसार अपने आपको ढाल लेना समायोजन कहलाता है ताकि अपनी आवश्यकताओं को संतुष्ट किया जा सके

कुसमायोजन (Maladjustment) :- यदि कोई व्यक्ति वातावरण में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता तो वह कुसमायोजन को दर्शाता है

कुसमायोजन के तत्व

- **तनाव (STRESS) :-** जब व्यक्ति वातावरण और मांग के अनुरूप कार्य नहीं कर पाता तो वह तनाव में आ जाता है

- **द्वेष / चिंता (HATRED / WORRY) :-** जब व्यक्ति वातावरण और परिस्तिथि के अनुसार अपने आपको बदल नहीं पाता तो उसमे द्वेष और चिंता जागृत हो जाती है
- **दबाब (COMPRESSION):-** दबाव प्रतियोगिता के कारण होता है आत्म सम्मान के लिए व्यक्ति दबाव में आ जाता है
- **कुंठा (FRUSTRATION) :-** किसी भी इच्छा में बाधा आने से उसकी उम्मीद खत्म हो जाना कुंठा कहलाती है
- **द्वंद्व (CONFLICT) :-** जब एक ही समय में दो शक्तिया जागृत हो जाती है तब व्यक्ति के अंदर द्वंद्व उत्पन्न हो जाता है

सुरक्षा युक्तियां (Defence mechanism)

ये ऐसी युक्तियाँ होती है जिसमे व्यक्ति विशेष परिस्थिति में अपनी चिंता और कमीयो से मुक्ति पाने के लिए एक अस्थायी कवच को साधन के रूप में इस्तेमाल करता है

समायोजन करने के लिए व्यक्ति जिन रक्षात्मक युक्तियों का सहारा लेता है वह दो प्रकार की होती है –

1. **प्रत्यक्ष विधि (Direct Method)**
2. **अप्रत्यक्ष विधि (Indirect Method)**

प्रत्यक्ष विधि (Direct Method) :- तनाव को कम करने के प्रत्यक्ष उपाये वे है जिन्हे व्यक्ति चेतन रूप में अपनाता है

अप्रत्यक्ष विधि (Indirect Method) :- तनाव को कम करने के अप्रत्यक्ष उपाये वे है जिन्हे व्यक्ति अचेतन रूप में अपनाता है

SACHIN ACADEMY

1. तर्कसंगति (Rationalisation) :- इसमें कोई व्यक्ति अपनी बात को सही ठहराने के लिए झूठे कारण और प्रतिक्रिया देता है, जैसे - पेपर पास न होने पर अध्यापक को दोष देना

2. दमन (Repression) :- इसमें व्यक्ति के कष्टदायक यादें, विचार या भावना अचेतन मन में चली जाती है।

3. शमन (Suppression) :- जब व्यक्ति की कोई इच्छा पूरी नहीं होती तो वह Forcefully उस इच्छा को भुला देता है

4. क्षतिपूर्ति (Compensation) :- इसमें व्यक्ति एक क्षेत्र की कमियों या असफलताओ को दूसरे क्षेत्र से पूरा करता है, जैसे - कम लम्बाई वाली लड़की द्वारा ऊँची heel वाली sandals पहनना

5. आत्मीकरण/ तदात्मीकरण (Identification) :- इसमें व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर खुद को उसके व्यक्तित्व में ढालने का प्रयास करता है, जैसे - सलमान खान को देखकर लड़के बॉडी बनाना शुरू कर देते है

6. प्रतिस्थापन (Displacement) :- जब व्यक्ति अपने संवेग, विचार और इच्छाओ को व्यक्त करने में असमर्थ होता है तो वह किसी अन्य पर अपनी भावना अभिव्यक्त करके समायोजन स्थापित करता है, जैसे - office में boss की डाँट पड़ने पर घर आकर बच्चो पर गुस्सा निकालना

7. प्रतिगमन (Regression) :- जब किसी व्यक्ति को कोई तनाव होता है तो वह उससे बचने के लिए past में चला जाता है, जैसे - गुस्सा आने पर बच्चो की तरह चिल्लाना या तोड़ फोड़ करना

8. उदात्तीकरण (Sublimation) :- इसमें व्यक्ति अपनी अनैतिक इच्छाओ, प्रेरणाओं की संतुष्टि समाज के स्वीकृत उद्देश्यों के अनुसार करता है, जैसे - बचपन में गुस्सेल बच्चे का बड़े होकर boxer बनना

SACHIN ACADEMY

आकलन, मूल्यांकन
(ASSESSMENT, EVALUATION)

आकलन (Assessment) :- किसी के बारे में जानकारी इकठ्ठा करने की प्रक्रिया आकलन कहलाती है। यह Teaching Learning Process के दौरान निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

- आकलन अधिगम को improve करने का एक तरीका है और आकलन का primary object यह है की concept से संबंधित जो भी confusion बच्चो को है उसको समझाना चाहिए

आकलन दो प्रकार का होता है

1. रचनात्मक आकलन 2. योगात्मक आकलन

1. रचनात्मक आकलन (Formative Assessment) :- पढ़ाने के दौरान किया गया आकलन ही रचनात्मक आकलन कहलाता है यह बच्चो के बारे में जानने का बेस्ट आकलन या तरीका है

2. योगात्मक आकलन (Summative Assessment) :- साल के अंत में किया जाने वाला आकलन योगात्मक आकलन कहलाता है

Assessment of Learning – Summative Assessment (सीखने का आकलन)

Assessment for Learning – Formative Assessment (सीखने के लिए आकलन)

Assessment as Learning –Self Assessment (सीखने के रूप में आकलन)

SACHIN ACADEMY

Evaluation मूल्यांकन :- किसी विषय, वस्तु, व्यक्ति आदि के गुण / दोषो का विवेचन करके उसके सम्बन्ध में सही निर्णय करना मूल्यांकन कहलाता है। यह मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों होता है।

Continuous Comprehensive Evaluation

सतत और व्यापक मूल्यांकन (CCE) :- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार – " सतत और व्यापक मूल्यांकन जिसमे मूल्यांकन के शैक्षिक और गैर-शैक्षिक दोनों पहलू शामिल हो और जो शिक्षा की सम्पूर्ण अवधि के लिए हो" पर जोर देती है। CCE इसलिए जरुरी है ताकि जल्दी जल्दी होने वाली गलतियों की जगह कम अंतराल (less frequent) पर होने वाली गलतियों को सुधारना।

SCHOOL BASED ASSESSMENT (SBA) :- इसमें teacher बाहरी पेपरों की जगह खुद ही उनकी क्षमताओं (capabilities) को बेहतर बनाता है।



- गत्यात्मक मूल्यांकन (dynamic assessment) यह बच्चो की विशिष्ट अधिगम आवश्यकताओ को समझने में help करता है।

SACHIN ACADEMY

मूल्यांकन की विशेषताएँ

वैधता (Validity) :- वैध मूल्यांकन वह होता है, जो वास्तव में उसी बात का परीक्षण करे जिसके बारे में वह जानना चाहता है

विश्वसनीयता (Reliability) :- विभिन्न परन्तु एक जैसी परिस्थितियों में किसी प्रश्न, परीक्षण या परीक्षा का उत्तर पूर्णत: एक ही प्रकार का होगा तो ऐसा मापन विश्वसनीयता कहलाएगा।

व्यावहारिकता (Practicality) :- मूल्यांकन की प्रक्रिया, लागत, समय और प्रयोग-सरलता की दृष्टि से वास्तविक, व्यावहारिक और कुशल होनी चाहिए।

- ✦ **वस्तुनिष्ठता** - जिस मूल्याङ्कन में एक ही उत्तर हो और परीक्षक का प्रभाव न पड़ता हो।
- ✦ **व्यापकता** - इसमें सारे गुणों का मापन होता है।

PORTFOLIOS (पोर्टफोलियो)



- ➢ पोर्टफोलियो एक प्रकार की फाइल होती है जिसमे किसी बच्चे के एक निश्चित अवधि में किये गए कामो का **संग्रह (collection)** होता है।
- ➢ इसमें बच्चे की **उपलब्धियों, प्रगति** और **कमियों** को भी रखा जाता है।
- ➢ पोर्टफोलियो से बच्चे की महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती है। जैसे - **व्यक्तिगत, पारिवारिक शैक्षणिक/सहशैक्षणिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक** जानकारी आदि।
- ➢ बच्चो के पोर्टफोलियो बनाने का ये उद्देश्य होता है की इसकी सहायता से उनका **मूल्याँकन** करना आसान हो जाता है।

SACHIN ACADEMY

RECORD (रिकॉर्ड)

1. Anecdotal record :- इसमें बच्चे के सभी तरह के रिकॉर्ड रखे जाते है। जैसे - **behaviour, skills, attitude** etc.

2. Cumulative record :- इसमें बच्चे के क्लास से सम्बंधित रिकॉर्ड रखे जाते है। जैसे - **academic, attendance, acheivements** etc.

शिक्षण की विधियां

Teaching Methods

समस्या समाधान विधि (problem solving method) :- इसमें **students** को एक **problem** दी जाती है जिसका समाधान, **students** खोजते है और **knowledge** लेते है। समस्या समाधान में ही एक **hint** दिया होता है।

इसके Step

1 समस्या को चुनना

2 समस्या के कारण

3 समस्या से **related information** को **collect** करना

4 समस्या का समाधान

5 समाधान का व्यावहारिक प्रयोग

1. आगमन विधि (Inductive Method) :- इस विधि में सीधे अनुभवों, उदाहरणों तथा प्रयोगों का अध्ययन करके नियम निकाले जाते है। यह शिक्षण विधि" छात्र केंद्रित" विधि है, जो विद्यार्थियों को" करके सीखने" पर बल देती है

इस विधि में तर्क करते हुए

1- उदाहरण से नियम की ओर

2- स्थूल से सूक्ष्म की ओर

3- विशिष्ट से सामान्य की ओर

SACHIN ACADEMY

4- ज्ञात से अज्ञात की ओर

5- मूर्त से अमूर्त की ओर

6- प्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर आगे बढ़ते हैं।

2. निगमन विधि (Deductive Method) :- इस विधि में सर्वप्रथम विद्यार्थियों को नियमों का ज्ञान दे दिया जाता है इसके पश्चात" उदाहरण" देकर उन नियमों को समझाया जाता है यह विधि एक" शिक्षक केंद्रित" विधि कहलाती है इसमें शिक्षक ही सारे नियम सिखाते हैं। "

इस विधि में

i. प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर

ii. सूक्ष्म से स्थूल की ओर

iii. सामान्य से विशिष्ट की ओर

iv. अज्ञात से ज्ञात की ओर

v. "नियम से उदाहरण की ओर" आगे बढ़ते हैं।

समस्या समाधान विधि (Problem solving method) :- इसमें students को एक problem दी जाती है जिसका solution, student खोजते है और knowledge लेते है

3. प्रोजेक्ट विधि (Project method) :- इसके प्रवर्तक " किल पैट्रिक" थे। यह विधि अनुभव केन्द्रित होती है। यह बालकों के समाजीकरण पर विशेष बल देती है। इस विधि में विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से कार्य करता है एवं अपनी समस्याओं का हल अपने स्वयं के विचारों के आधार पर करता है। यह विधि वास्तविकता के सिद्धांत पर कार्य करती है

SACHIN ACADEMY

4. प्रत्यक्ष विधि (Direct method) :- इस विधि में बालक को बिना व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराएं भाषा सिखाई जाती है । इस विधि में जो बालक की मातृभाषा होती है उसे बिना मध्यस्थ बनाएं उसे अन्य भाषा सिखाई जाती है अर्थात मातृभाषा की सहायता नहीं लेकर बल्कि विद्यार्थी को सीधे बार-बार मौखिक एवं लिखित अभ्यास द्वारा सीधे नई भाषा सिखाई जाती है इसमें क्षेत्रीय भाषा का भी प्रयोग नहीं किया जाता है। इस विधि में वार्तालाप के माध्यम से अधिक से अधिक सीखने पर बल दिया जाता है जिससे वह प्राकृतिक रूप से सीख सकें।

5. विश्लेषण विधि (Analysis method) :- इस विधि में समस्या को छोटे-छोटे भागो में बाँट कर उनका अध्ययन व समीक्षा करते हुए उसे हल किया जाता है।

6. संश्लेषण विधि (Synthesis method) :- विश्लेषण तथा संश्लेषण विधि एक दूसरे के पूरक होती है। विश्लेषण कर लेने के पश्चात ही संश्लेषण का कार्य होता है। इस विधि में किसी समस्या के छोटे-छोटे भागो को जोड़ते हुए समस्या का हल किया जाता है। इस विधि का प्रयोग प्रायः ज्यामिति (Geometry) में किया जाता है।

7. अनुकरण विधि (Simulation method) :- इस विधि में बालक अनुकरण करके सीखता है इस लिए इस विधि को अनुकरण विधि कहा जाता है। इस विधि में बालक अपने शिक्षक का अनुकरण करके लिखना, पढ़ना व नवीन रचना करना सीखता है। इस विधि के अन्तर्गत बालक शिक्षक के उच्चारण को सुनकर वाचन करना सीखते हैं। पहले शिक्षक बोलता है, फिर बच्चे उसका अनुसरण करते है। इस विधि के आधार पर ही शुद्ध उच्चारण को ही भाषा शिक्षक का सर्वश्रेष्ठ गुण माना जाता हैं।

8. व्याख्यान विधि (Lecture Method) :- व्याख्यान विधि में किसी तथ्य , विषय की व्याख्या की जाती है। व्याख्यान विधि को शिक्षण की सबसे प्राचीन विधि माना जाता है। इस विधि में शिक्षक की भूमिका प्रमुख होती है इसलिए इसे शिक्षक केंद्रित शिक्षण विधि मानी जाती है। यह विधि स्मृति स्तर (Memory Level) का शिक्षण

अधिगम कराती है। सामाजिक विज्ञान में व्याख्यान विधि का प्रयोग सबसे अधिक होता है। व्याख्यान शिक्षण विधि में पाठ्य वस्तु एवं विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल दिया जाता है।

- **Chunking (खंडीकरण) :- इसमें बच्चो को concept टुकड़ो में तोड़ कर समझाया जाता है। जैसे mobile no के 10 अंकों की संख्या को 3 या चार अंकों के समूहों में बाट कर याद करना ।**

SACHIN ACADEMY

समाजीकरण
(Socialization)

समाजीकरण :- यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमे मानव समाज द्वारा सीखता है। और यह पूरे जीवन तक निरंतर (Continuously) चलती है। यह एक complex process है जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूप से होता है।

समाजीकरण इकाइयों के प्रकार (Types of Socialization Agents)

बच्चे के समाजीकरण के मुख्यतः दो तरह की एजेंसी काम करती है –

(1) सक्रिय एजेंसी (Active Agency) :- इसका बच्चे पर सीधा-सीधा पभाव पड़ता है।

उदाहरण- परिवार, दोस्त, पडोसी, रिश्तेदार, स्वास्थ्य, क्लब, स्कूल आदि।

(2) निष्क्रिय एजेंसी (Passive Agency) :- इसका बच्चे पर सीधा-सीधा प्रभाव नहीं पड़ता।

उदाहरण- पुलिस स्टेशन, सार्वजानिक पुस्तकालय, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट आदि।

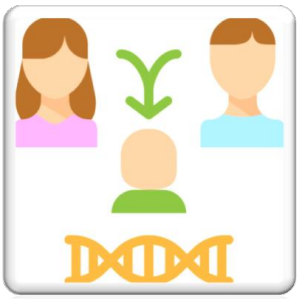
समाजीकरण की इकाइयाँ Agency

(1) परिवार family :- समाजीकरण का आरम्भ परिवार से होता है। और यह समाजीकरण की पहली इकाई है।

(2) School, Teacher, Games, Media, धार्मिक संस्थाए :- ये socialisation की secondary agencies है

अनुवांशिकता / वंशानुक्रम और वातावरण

Heredity & Environment



Heredity :- जब अनुवांशिक (Genes) गुण (आंख, नाक, रंग, चिंतन, लंबाई, बुद्धि आदि) एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में Transfer होते हैं उसे अनुवांशिकता या वंशानुक्रम कहते हैं

Environment :- इससे अभिप्राय हैं हमारे चारों तरफ का माहौल जैसे घर, स्कूल, परिवार, पड़ोसी, भोजन आदि Jeans

- मानव विकास में दोनों का महत्वपूर्ण योगदान है।
- विकास (Development = Heridity & Environment)

Sex Determination / लिंग निर्धारण



XY



XX

SACHIN ACADEMY

- हमारे शरीर में दो तरह के Sex Chromosomes पाए जाते हैं। X और Y
- Total Chromosomes = 46 (23 जोड़े)

महत्वपूर्ण सिद्धांत (Principal of Heredity)

प्रत्यागमन का सिद्धांत (Principal of Regression) :- विपरीत गुणों का उत्पन्न होना यानी तेज बुद्धि वाले मां-बाप के कम बुद्धि के बच्चे होना या कम बुद्धि वाले के तेज बुद्धि के बच्चे होना।

गाल्टन का सिद्धांत (Galton's Theory) :- इनके अनुसार जब बच्चे में गुण पिछली पीढ़ी से भी Transfer होते हैं जैसे दादा-दादी से तो यह गाल्टन का सिद्धांत या जीव गणना सिद्धांत (Biometry Theory) कहलाता है।

बीज मैन का सिद्धांत :- इनके अनुसार माता-पिता से प्राप्त बीज कोष कभी खत्म नहीं होता, यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में निरंतर (Continuosly) चलता रहता है।

- **ग्रेगर मेंडल :-** इन्हें "अनुवांशिकता का जनक" कहा जाता है इन्होंने मटर के दानों पर प्रयोग करके अनुवांशिकता के नियम निर्धारित किए थे।

SACHIN ACADEMY

Cognition, Emotion and Mind Mapping



संज्ञान cognition :- इसका मतलब होता है सूचनाओं का ग्रहण करना यानी मनुष्य जिस पर्यावरण में रहता है उसमे वस्तुओं, व्यक्तिओ, घटनाओ आदि के प्रति जो अवधारणा बना

लेता है उसे ही संज्ञान कहते है। संज्ञान के अंदर बहुत सी मानसिक क्रियाएँ आती है। जैसे - कल्पना, चिंतन, तर्क, आदि।

संज्ञानात्मक विकास के चरण

1. अवधान (Attention) :- संज्ञान का प्रयोग करते समय बच्चा पहले अवधान करता है

2. स्मृति (Memory) :- जब बच्चा अपने वातावरण के चारो ओर चीजों का अवधान कर लेता है तो वह उनसे सम्बंधित सूचनाओं को अपने दिमाग में इक्कठा कर लेता है।

3. Meta Cognition :- इसमें सूचनाओं को वर्गीकरण करके सही समय पर सही सूचना को प्रस्तुत किया जाता है Meta cognition बच्चो को उनके सिखने का स्वयम मूल्यांकन करने और उनकी समझ की जांच करने में help करता है।

मन मानचित्रण (Mind Maping)

- इसके द्वारा हम सूचनाओं का अपने संज्ञान में चित्र बनाते है। इसे मन की क्रियाशीलता का अनुसन्दान (research) भी कहते है क्युकी इसमें हम अपने मन को क्रियाशील रखते है ओर खोजबीन करते रहते है।



SACHIN ACADEMY

संवेग (Emotion)

ये वह स्थिति होती है जिसमे व्यक्ति उत्तेजित हो जाता है, इसे अलग-अलग शारीरिक परिवर्तनों द्वारा पहचाना जा सकता है।

संवेगो के प्रकार (Types of Emotions)

मैक्डूगल को संवेग का जनक भी कहा जाता है। इन्होने 14 प्रकार की मूल प्रवृतिया बताई है जो संवेग से जुडी होती है।

मूल प्रवृतिया	सम्बंधित संवेग
पलयान (Escape)	भय (fear)
युयुत्सा (Combat)	क्रोध (anger)
निवृत्ति (repulsion)	घृणा (disgust)
जिज्ञासा (curiosity)	आश्चर्य (wonder)
शिशुरक्षा (parental)	वात्सल्ये (love)
शरणागति (appeal)	विषाद (distress)
रचनात्मक (construction)	संरचनात्मक भावना (feeling of creativeness)
संचय प्रवृति (acquisition)	स्वामित्व की भावना (feeling of ownership)
सामूहिकता (gregariousness)	एकाकीपन (feeling of loneliness)
काम (sex)	कामुकता (lust)
आत्म-गौरव (self-assertion)	श्रेष्ठा की भावना (positive self-feeling)
दैन्य (submission)	आत्महीनता (negative self-feeling)
भोजन-अन्वेषण (food seeking)	भूख (appetite)
हास (laughter)	आमोद (amusement)

SACHIN ACADEMY

- संज्ञान और संवेग आपस में संबंधित होते है

MOTIVATION (अभिप्रेरणा)

MOTIVATION (अभिप्रेरणा) :- अभिप्रेरणा एक ऐसी आंतरिक शक्ति या बल या जोश/जूनून होता है, जो व्यक्ति को लक्ष्य की और ले जाता है या अग्रसर करता है, जैसे - पेपर पास करने के लिए बच्चे जो शक्ति लगाते है



अभिप्रेरणा (Motivation) दो प्रकार की होती है

1. Internal motivation (आंतरिक अभिप्रेरणा)

2. External motivation (बाह्य अभिप्रेरणा)

1. Internal motivation (आंतरिक अभिप्रेरणा) :- जब कोई व्यक्ति किसी काम को करने के लिए आंतरिक रूप से अभिप्रेरित होता है तो वह आंतरिक अभिप्रेरणा कहलाती है, जैसे - अगर कोई अपनी मर्जी से teacher बनना चाहता है तो वह आंतरिक रूप से अभिप्रेरित है

2. External motivation (बाह्य अभिप्रेरणा) :- जब कोई व्यक्ति किसी काम को करने के लिए बाह्य रूप से या दुसरो के द्वारा अभिप्रेरित होता है तो वह बाह्य अभिप्रेरणा कहलाती है, जैसे - बच्चो को सरकारी अध्यापक बनाने के लिए उसे पुरूस्कार/दंड/प्रशंसा/लालच देना

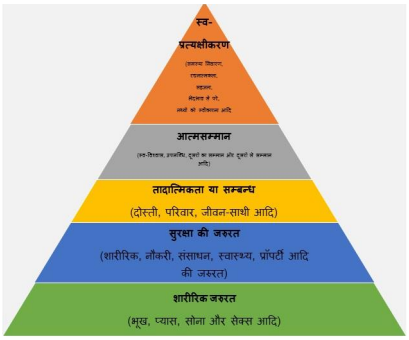
SACHIN ACADEMY

PRINCIPLE OF MOTIVATION - (अभिप्रेरणा के सिद्धांत)

1. Maslow Hierarchy needs Theory (मैस्लो का आवश्यकता पदानुक्रम) OR Self-actualization Theory

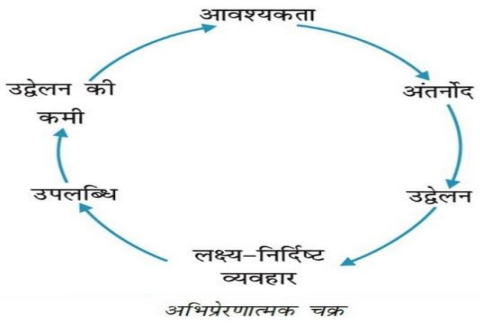
आत्म सिद्धि का सिद्धांत :- इस सिद्धांत के प्रतिपादक Abraham.H.Maslow (1968-1970) अब्राहम एच मैस्लो थे

मैस्लो के अनुसार हमारी 5 तरह की आवश्यकताएं होती है



1. दैहिक आवश्यकता (Physiological Needs)
2. सुरक्षा की मांग (Safety Needs)
3. आत्मीयता की आवश्यकता (Belonginess Needs)
4. सम्मान की आवश्यकता (Esteem Needs)
5. आत्म सिद्धि की आवश्यकता (Self Actvalization)

अभिप्रेरणा चक्र



अभिप्रेरणात्मक चक्र

1.आवश्यकता (Need)
2. अंतर्नोद/प्रबल प्रेरणा (Drive)
3. उद्वेलन / उत्तेजना (Stimulus / Arousal)
4. लक्ष्य - निर्दिष्ट व्यवहार (Goal Directed Behaviour)
5. उपलब्धि (Achievement)
6. उद्वेलन/उत्तेजना की कमी (Reduction of Arousal)

SACHIN ACADEMY

निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण
Diagnostic & Remedial Teaching





निदानात्मक शिक्षण (Diagnostic Teaching) :- निदान का अर्थ होता है "कारण जानना" यानि इसमें बच्चो की असफलता / कमियों / कठिनाइयों का पता लगाया जाता है।

उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching) :- बच्चो की कमियों का पता लगाने के बाद उनका समाधान करना या फिर दोबारा से शिक्षण करवाना उपचारात्मक शिक्षण कहलाता है।

SACHIN ACADEMY

भाषा और चिंतन
(Language And Thinking)

भाषा :- अपने विचारों को दूसरों तक पहुंचाना ही भाषा कहलाती है भाषा और विचार में गहरा संबंध होता है

भाषा का स्वभाव एवं क्रम

मनोवैज्ञानिक क्रम

सुनना	-	बोलना	-	पढ़ना	-	लिखना
Listening	-	Speaking	-	Reading	-	writing
L		S		R		W

भाषा विकास के सिद्धांत

1. परिपक्वता का सिद्धांत (PRINCIPLE OF MATURITY) :- परिपक्वता से अभिप्राय है कि भाषा अवयवों एवं स्वरों पर नियंत्र ण होना ! जैसे - बोलने में जीभ, गला, तालू , होंठ, दांत तथा स्वर यंत्र आदि परिपक्व होते हैं तो भाषा पर अच्छा नियंत्रण होता है और अभिव्यक्ति यानी विचारों का आदान-प्रदान भी अच्छा होता है

2. अनुबंधन (किसी वस्तु से जोड़कर बताना) का सिद्धांत (PRINCIPLE OF LINKAGE) :- शैशवावस्था में बच्चों को शब्दों की जानकारी मूर्त वस्तुओं (जो दिखाई दे सके) से जोड़कर दी जाते हैं यदि बच्चों को किसी चीज या वस्तु को दिखाया हैं तो बच्चा जल्दी सीखता है

3. अनुकरण (नकल करना) का सिद्धांत (PRINCIPLE OF IMITATION) :- मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बालक अपने परिवारजनों तथा साथियों की भाषा का अनुकरण करके सीखते हैं

SACHIN ACADEMY

चिंतन (THINKING)



चिंतन (THINKING) :- किसी भी समस्या का समाधान करने के लिए हमारे मन में जो विचार उत्पन्न होते हैं वही विचार चिंतन कहलाते है

- चिंतन का आरंभ समस्या उत्पन्न होने पर होता है तथा समस्या समाधान होने तक चलता है

चिंतन के प्रकार

1. स्वलीन चिन्तन (AUTISTIC THINKING) (स्वयं में लीन रहना) :- ऐसी कल्पना करना जिसका कोई वास्तविक स्वरूप ना हो स्वलीन चिंतन कहलाता है

2. यथार्थवादी चिंतन (REALISTIC THINKING) :- यह चिंतन वास्तविकता से संबंधित होता

3 Types of Realistic Thinking

1. अभिसारी चिंतन (CONVERGENT THINKING) :- इसमें समस्याएँ एक ही बिंदु पर केंद्रित होती है और समस्या का एक ही समाधान होता है, जैसे - भारत की राजधानी – दिल्ली

- **इसके द्वारा खोजा हुआ समाधान बंद अंत (Close Ended) वाला होता है।**

2. अपसारी चिंतन (DIVERGENT THINKING) :- इसमें समस्याएँ एक ही बिंदु पर केंद्रित नहीं होती है। इसमें समस्या को कल्पना (Imagination) शक्ति एवं सर्जनात्मकता (Creativity) का प्रयोग करके कई प्रकार से हल किया जा सकता है। जैसे - दिल्ली की विशेषताओं का वर्णन करें आदि

- **इसके द्वारा खोजा हुआ समाधान मुक्त अंत (Open Ended) वाला होता है।**

3. आलोचनात्मक चिंतन (CRITICAL THINKING) :- गुण और दोषों को देखते हुए किसी बात को स्वीकार करना आलोचनात्मक चिंतन कहलाता है

SACHIN ACADEMY

चिंतन के सामान्य प्रकार

1. प्रत्यक्षात्मक चिंतन (CONCRETE THINKING) (मूर्त) :- जो चीजें दिखाई देती है उनके बारे में चिंतन करना प्रत्यक्षात्मक कहलाता है यह चिंतन निम्न स्तर का होता है

2. प्रत्ययात्मक चिंतन (ABSTRACT THINKING) (अमूर्त) :- जो चीजें दिखाई नहीं देती उनके बारे में विचार करना प्रत्ययात्मक चिंतन कहलाता है

3. काल्पनिक चिंतन (IMAGINARY THINKING) :- पूर्व अनुभवों के आधार पर जो हम कल्पना करते हैं काल्पनिक चिंतन कहलाता है

4. तार्किक चिंतन (LOGICAL THINKING) :- किसी चीज या वस्तु के बारे में तर्क करना, विचार करना, तार्किक चिंतन के अंतर्गत आता है यह चिंतन का सर्वोत्तम स्तर होता है

SACHIN ACADEMY

GENDER



GENDER :- यह एक समाजिक संरचना (socially construct) जो समाज द्वारा निर्धारित होता है।

GENDER BIAS (लैंगिक पूर्वाग्रह) :- इसमें male और female में अंतर किया जाता है। जैसे school competition में boys और girls में से girls को प्राथमिकता देना।



- एक teacher को हमेशा दोनों को बराबर मानना चाहिए और लड़का लड़की में अंतर नहीं करना चाहिए।



Gender Sterotyping (लैंगिक रूढ़िवादिता) :- जो चीज़े / तथ्य पहले से चलती आ रही है , उसी को मानना gender stereotyping कहते है। जैसे :- महिला घर के काम करती है और पुरुष बाहर के

शिक्षा का अधिकार, (RTE) 2009



- वर्ष 2002 में संविधान के 86 वें संशोधन द्वारा अनुच्छेद 21 ए के भाग 3 के माध्यम से 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया था।
- इसको प्रभावी बनाने के लिए 4 अगस्त, 2009 को लोकसभा में यह अधिनियम पारित किया गया, जो 1 अप्रैल, 2010 से पूरे देश में लागू हो गया।
- RTE का Official नाम है - The Right of Children to free and compulsory Education Act 2009 (निशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009)

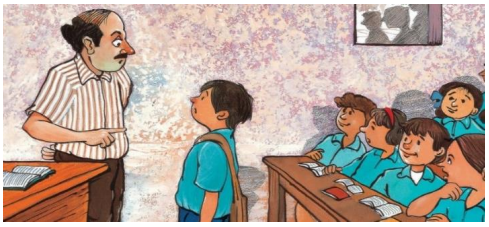


धारा 12 :

- RTE 2009 के अनुसार प्राइवेट स्कूलों में कितने प्रतिशत सीटें गरीब विद्यार्थियों के लिए आरक्षित होती है – 25%

SACHIN ACADEMY

धारा13 :



- प्रति व्यक्ति फीस लेने पर शुल्क का 10 गुना जुर्माना देना होगा।

धारा14 :



- किसी बालक के पास जन्म प्रमाण पत्र न होने की स्तिथि में विद्यालय में प्रवेश लेने से इंकार नहीं किया जा सकता।

धारा15 :



- बच्चो को शैक्षणिक वर्ष (academic year) के आरम्भ में प्रवेश दिया जाएगा।

धारा16 :

- Student को न तो class में fail किया जाएगा और न ही विद्यालय से निकाला जाएगा।



धारा17 :

- बच्चो को शारीरिक दंड देना और प्रताड़ित करना मना है

SACHIN ACADEMY

धारा24 :

- शिक्षक के **कर्तव्य**



धारा 27 :

- RTE 2009 के ACCORDING शिक्षक को गैर शैक्षणिक कार्यो में नहीं लगाया जा सकता **(जनगणना, चुनाव, आपदाप्रबंधन)** छोड़ कर







- **RTE 2009** के अनुसार प्राथमिक कक्षाओं में छात्र एवं शिक्षक का अनुपात होता है – **30 : 1**



- **RTE 2009** के अनुसार उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्र एवं शिक्षक का अनुपात होता है – **35 : 1**

- **RTE 2009** के अनुसार कक्षा 1 से 8 तक यदि प्रवेश दिए गए सदस्यों की संख्या 200 से अधिक है तो विद्यार्थी एवं शिक्षक का अनुपात होगा – **40 : 1**



SACHIN ACADEMY

- यदि प्राथमिक स्तर पर 150 से अधिक बच्चे हो तो इसके लिए प्रावधान – एक प्रधानाध्यापक और 5 शिक्षक
- RTE 2009 के अनुसार शिक्षक के लिए एक सप्ताह में न्यूनतम कितने घंटे कार्य होते है – 45 घंटे



- RTE 2009 के अनुसार प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम शैक्षणिक घंटे व कार्य दिवस होता है– 800 घंटे , 200 दिन
- RTE 2009 के अनुसार उच्च प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम शैक्षणिक घंटे व कार्य दिवस होता है– 1000 घंटे , 220 दिन



- RTE 2009 के अनुसार किस कक्षा तक बालक को निष्काषित नहीं किया जा सकता– कक्षा 8 तक



- RTE 2009 के अनुसार कक्षा 1 से 5 तक के बालको के घर से विधालय की दूरी होनी चाहिए – 1 km
- RTE 2009 के अनुसार SMC (SCHOOL MANAGEMENT COMMITTEE) का अध्यक्ष होता है- अभिभावक

SACHIN ACADEMY



- इस अधिनियम के अनुसार स्कूल के विकास के अनुदान एवं खर्च का उत्तरदायित्व विद्यालय **प्रबंधन समिति** का होगा।

- **RTE 2009** के अनुसार विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चो को किस शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत पढ़ना चाहिए- **समावेशी शिक्षा व्यवस्था**



- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, **2009** के क्रियान्वयन के बाद कक्षा-कक्ष आयु के अनुसार अधिक समजातीय है

- **RTE 2009** के ACCORDING दिव्यांग बच्चो के लिए मुफ्त शिक्षा- **18 वर्ष तक है।**

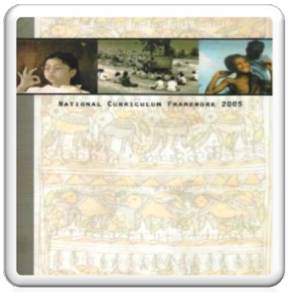


CACHIN ACADEMY

NCF 2005

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005

NATIONAL CURRICULUM FRAMEWORK 2005



राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एक ऐसा **दस्तावेज** है। जिसमे ऐसे विषयो पर चर्चा की गई है। कि बालको को क्या और किस प्रकार से पढ़ाया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के मार्गदर्शी सिद्धांत

- ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ा जाए।
  Knowledge should be linked to the outdoor life of the school.
- पढाई को रटंत प्रणाली से मुक्त किया जाए।
  Study should be freed from the rote system.
- पाठ्यचर्या पाठ्यपुस्तक केंद्रित ना हो।
  Curriculum should not be textbook centered.
- विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से जोड़ा जाए।
  The education provided in the school should be linked to the various types of activities.
- राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति आस्थावान विद्यार्थी तैयार किये जाए।
  Students should be pre pared for national value

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के प्रमुख सुझाव

- बालक सक्रिय (child active) है, वह स्वयं से जाने और सीखे और नयी नयी चीजों को आजमाए, जोड़ तोड़ करे, गलतियां करे, और स्वयं सुधार करे
- सीखना सक्रिय (learning active) व सामाजिक गतिविधि (social activity) है



SACHIN ACADEMY

- सिखने में यांत्रिकता (बार-बार) नहीं होनी चाहिए
- सिखने को डर और अनुशाशन (Dicipline) की जगहे आनंद एवं संतोष से जोड़ा जाये
- बालक को स्कूल, घर, समुदाय आदि सब जगह महत्यपूर्ण मन जाये और उसकी भाषा, संस्कृति को भी सम्मान दिया जाये
- प्राथमिक स्तर (Primary Level) पर पाठ्यचर्या की सभी गतिविधि में भाषा व गणित का महत्वपूर्ण स्थान माना गया है
- बहुभाषिक (multilingual) कक्षा शिक्षण तीन भाषाओ (त्रि भाषा सूत्र) की वकालत करता है



- इसने भाषा के चार कौशल की बात की है - सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना
- किसी भी प्रकार की सूचना को ज्ञान मानने से बचा जाए।
- विद्यार्थियों को दी जाने वाली शिक्षा में शिक्षण सूत्र जैसे - ज्ञात से अज्ञात की ओर , मूर्त से अमूर्त की ओर आदि शिक्षण सूत्रों का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाए।



- सजा व पुरुष्कार की भावना (punishment and vengeance) को सीमित किया जाए।
- सह-शैक्षिक गतिविधियों में बच्चों के अभिभावकों (parents) को भी जोड़ा जाए।



- विशाल पाठ्यक्रम व मोटी किताबें शिक्षा प्रणाली की असफलता का प्रतीक है।
- मूल्यों को उपदेश देकर नहीं वातावरण देकर स्थापित किया जाए।
- पुस्तकालय (Library) में बच्चों को स्वयं पुस्तक चुनने का अवसर दें।

SACHIN ACADEMY

- सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मनोरंजन के स्थान पर सौंदर्य बोध (aesthetic sense) को बढ़ावा दें।
- शिक्षकों को अकादमिक संसाधन व नवाचार (innovation) आदि समय पर पहुंचाए जाएं।
- समुदाय (Community) को मानवीय संसाधन (human resource) के रूप में प्रयुक्त होने का अवसर दें।
- मानसिक स्तर एवं योग्यता (Eligibility) के अनुसार पाठ्यक्रम का निर्धारण
- बालकों के चहुंमुखी विकास (all round development) पर आधारित पाठ्यचर्या हो।
- सभी विद्यार्थियों हेतु समावेशी वातावरण (Inclusive environment) तैयार करना।

NCF 2005 पांच विधियों पर जोर देता है

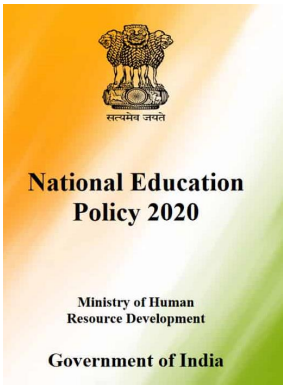
(1) करके सीखना (Learning by doing)
(2) निरीक्षण विधि (Inspection method)
(3) परीक्षण विधि (Test method)
(4) सामूहिक विधि (Collective Law)
(5) मिश्रित विधि (Mixed method)

- NCF 2005 में शिक्षक के प्रति दृष्टिकोण शिक्षक ज्ञान का स्त्रोत नहीं बल्कि एक ऐसा सुगमकर्ता (Facilitator) है, जो सूचना को अर्थ/बोध में बदलने की प्रक्रिया में विविध उपायों द्वारा बच्चों हेतु सहायक हो।



SACHIN ACADEMY

NEP 2020



- NEP के निर्माण के लिए JUNE 2017 में ISRO के पूर्व Chief Dr K Kasthuri Rangan की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था। इस समिति ने मई 2019 में NEP का मसौदा तैयार किया था
- National Education Policy 2020, वर्ष 1968 और वर्ष 1986 के बाद स्वतन्त्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति होगी।
- NEP 2020 के तहत केंद्र व राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा क्षेत्र पर GDP के 6% हिस्से के बराबर निवेश का लक्ष्य रखा गया है
- CABINET द्वारा MHRD का नाम बदल कर EDUCATION MINISTRY करने को भी मंजूरी दी गयी है
- वर्ष 2030 तक अध्यापन के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता चार वर्षीय एकीकृत B.ed डिग्री का होना अनिवार्य किया जायेगा
- नयी शिक्षा नीति के तहत M. phil को समाप्त कर दिया गया है

School Education

- यह नीति वर्तमान की 10+2 वाली स्कूली व्यवस्था को 3 से 18 वर्ष के सभी बच्चो के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षण शास्त्रीय आधार पर 5 + 3 + 3 + 4 की नयी व्यवस्था में करने की बात करती है



इस नीति के आधार सिद्धांत –

SACHIN ACADEMY

- सरचनात्मक समझ (Conceptual Understanding) पर जोर देना न की रटंत पद्ति (Rote Learning Method) और केवल परीक्षा के लिए पढ़ाई पर
- बहुभाषिकता (Multilingualism) और विविधता को प्रोत्शाहन देना, क्योकि बहुभाषी होने के उच्च संज्ञानात्मक लाभ होते है
- सिखने के लिए सतत मूल्यांकन Continues Evaluation पर जोर देना ना की साल के अंत में होने वाली परीक्षा को केंद्र में रखकर शिक्षण हो और मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चो को सिखने की प्रक्रिया में मदद करना भी है
- छात्रों की Progress के मूल्यांकन Evaluation के लिए "परख" नामक एक नए(national assessment center) की स्थापना की जाएगी
- बच्चो की शिक्षा का माध्यम कम से कम क्लास 5th या क्लास 8th या उससे आगे तक भी घर की भाषा / मातृभाषा (Mother tongue) / स्थानीय भाषा होगी
- राज्य विशेष रूप से भारत के अलग अलग राज्यों में "Three Language formula" को अपनाए लकिन इस formula में लचीलापन रखा जायेगा । त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत एक विकल्प के रूप में (दूसरी) भारतीय भाषाओं (Sanskrit) का अध्ययन
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, भारत सरकार की एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल, इस बात पर बल देती है कि विद्यार्थी अधिकांश रूप से प्रमुख भारतीय भाषाओं की उल्लेखनीय एकता के बारे में जानेंगे।
- कक्षा छह के लिए एक अतिरिक्त भाषा के रूप में शास्त्रीय भाषा Classical Language (Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam, Odisha, Pali, Farsi) आदि का अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर पर एक अतिरिक्त विकल्प के रूप में विदेशी भाषा (कोरियन, जापानी, थाई, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, पुर्तगाली और रूसी) का अध्ययन।

SACHIN ACADEMY

- NEP 2020 - "यह सीखना की कैसे सीखना है " और "मानकीकरण से लचीलापन" (standardization to flexibility) की और बदलाव का प्रस्ताव रखती है।
- हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं, रचनात्मकता, तार्किक सोच, नवाचार और समालोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking) की पहचान करना और उनके समग्र विकास के लिए प्रयत्न करना



- समावेशी शिक्षा (inclusive education) = सभी के लिए अधिगम
- दिव्यांगन अधिगार अधिनियम 2016 (RPWD) यह समावेशी शिक्षा को एक ऐसी व्यवस्था के रूप में define करता है, जहा सामान्य व दिव्यांग सभी बच्चे एक साथ सीखते है
- NEP 2020 के ACCORDING दिव्यांग बच्चो के लिए एक उपयुक्त इमारती ढांचा, उपयुक्त तकनीक सुविधाएं और प्रत्येक STUDENTS के लिए एक शिक्षा और निजी शिक्षक के प्रावधान को बताया गया है।
- Class 6 से ही शैक्षिक पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को शामिल कर लिया जायेगा और इसमें Internship की व्यवस्था भी की जाएगी
- पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को प्रत्येक subject में कम करके इसे बेहद बुनियादी चीज़ो पर केंद्रित किया जायेगा ताकि आलोचनात्मक चिंतन, खोज आधारित, चर्चा आधारित, विश्लेषण आधारित अधिगम पर जरुरी ध्यान दिया जा सके
- राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तके - स्कूल के Curriculum में कमी, लचीलापन, और रट कर सिखने के बजाये रचनावादी सिखने के तरीके पर जोर देने के साथ साथ स्कूल की national text book में भी बदलाव होने चाहिए
- ECCE (Early childhood care and education) में मुख्य रूप से लचीली बहुआयामी, खेल आधारित, गतिविधि आधारित, खोज आधारित, बहुआयामी और बहुस्तरीय शिक्षा को शामिल किया गया है

SACHIN ACADEMY

- "स्कूल तैयारी module " यह एक तीन महीने का play आधारित module है जो NCERT और SCERT द्वारा उन बच्चो के लिए बनाया जायेगा जो क्लास 1st में एडमिशन के कुछ ही हफ्तों बाद अपने सहपाठियो से पिछड़ जाते है
- NEP 2020 के अनुसार learning (अधिगम) प्रयोगात्मक (Experiential) होना चाहिए जिसमे स्वयम करके सीखना (learning by doing) और प्रत्येक subject में कला और खेल को एकीकृत किया जायेगा
- NCERT & SCERT के मागदर्शन में राज्यों / केंद्र शाषित प्रदेश द्वारा सभी students के school based assessment के आधार पर तैयार होने वाले और parents को दिए जाने वाले progress card को पूरी तरह से नया स्वरुप दिया जायेगा। यह progress card (प्रगति पत्र) एक समग्र 360 डिग्री बहुआयामी (Multi-dimentional) कार्ड होगा जिसमे सभी students के संज्ञानात्मक (Cognitive), भावात्मक (Affective) और (Psychomotor domain) में विकास का बारीकी से किये गए विश्लेषण का विवरण, Students की विशेषताओं समेत दिया जायेगा ।

SACHIN ACADEMY

TAG WORDS

NEGATIVE WORDS

- केवल / मात्र / सिर्फ / ONLY
- रटना / याद करना (Memories) / कंठस्त करना (ROTE)
- दंड (Punishment) / सजा / समस्या / बोझ / हतोत्साहित (Discourage) / भय (Fear)
- पुस्तक केंद्रित (Textbook) / शिक्षक केंद्रित (Teacher centered)
- खाली स्लेट (Blank paper) / कोरी पट्टियां
- लैंगिक असमानता
- बच्चे के विचार / मात्र भाषा / त्रुटियों को महत्व न देना

- निष्क्रिय (Passive)
- रोजगार / व्यवसायिक / उच्च / ग्रेड की शिक्षा
- तकनीकी / वैज्ञानिक शब्दावली
- सीमित
- व्याख्या (Lecture) / व्याख्यान / परिभाषा (Definition)
- मानकीकृत (Standardized)
- वेधन और अभ्यास (Drill & Practice)
- कलनविधि (Algorithm)
- पृथक्करण और नामांकित (Segregation & labelling)
- तुलना (Comparison)
- योगात्मक आकलन (Summative assessment)
- उपेक्षा (Ignore)
- अनुशासन (Discipline)
- नियंत्रण (Control)

POSITIVE WORDS

- सर्वांगीण विकास
- करके सीखना (Learning by doing) / हस्तपरक अनुभव (Hand on activity)
- सम्मान / लगाव / प्रोत्साहन (Encourage)
- जिज्ञाषा (Curiosity)
- बाल केंद्रित (Child Centered)

SACHIN ACADEMY

- व्यावहारिक कुशलता
- वास्तविक / दैनिक जीवन से जोड़ना
- लोकतांत्रिक (Democratic) / प्रजातांत्रिक वातावरण
- समावेशी कक्षा / शिक्षा
- दृश्य और श्रव्य सामग्री
- संसाधन
- विभिन्न सन्दर्भो में भाषा-प्रयोग
- अवसर (Opportunity)
- सक्रिय (Active)
- समझना (Understand)
- खोजबीन (Discover)
- समालोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking)
- संवेदनशील (Sensitive)
- रचनात्मक आकलन (Formative assessment)
- त्रुटि (Errors) / भ्रांतिया (Misconceptions)
- मातृभाषा (Mother tongue)
- बहभाषिकता (Multilingualism)
- चर्चा (Discussion)
- संवेग (Emotion)

SACHIN ACADEMY

शिक्षण अधिगम सामग्री (Teaching Learning Material)

- शिक्षण प्रक्रिया को सरल, रोचक, आकर्षक बनाने के लिए जिन साधनो या माध्यमों का प्रयोग किया जाता है उन्हें शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री कहते है
- इनसे प्रभावशाली, रुचिकर एवं स्थाई अधिगम होता है।
- इनसे कठिन एवं भूतकाल की घटनाओ को आसानी से स्पष्ट किया जा सकता है। इनसे समय की बचत भी होती है।

शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रकार (Types of TLM)

1. इन्द्रियों के आधार पर तीन प्रकार की सामग्री होती है

(a) श्रव्य सहायक सामग्री (Audio Learning Material) :- इस प्रकार की सामग्री से बच्चे सुनकर ज्ञान को अर्जित करते है। इसके उदाहरण है , रेडियो, टेप रिकॉर्डर, ग्रामोफोन, चल चित्र, आदि।



रेडियो



टेप रिकॉर्डर



ग्रामोफोन

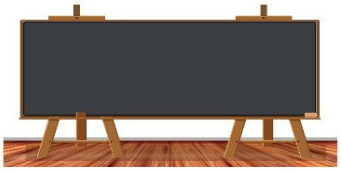


लिंग्वाफोन



भाषा प्रयोगशाला

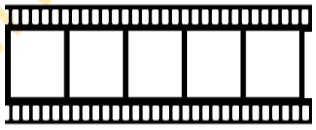
(b) दृश्य सामग्री (Visual Learning Material) :- इस प्रकार की सामग्री से बच्चे देखकर ज्ञान को अर्जित करते है। इसके उदाहरण है , श्यामपट्ट, बुलेटिन बोर्ड, फ्लेनील बोर्ड, मानचित्र, ग्लोब, चित्र, रेखाचित्र, कार्टून, मॉडल, पोस्टर, स्लाईड्स, फिल्म स्ट्रीप्स आदि।



श्यामपट्ट



फ्लैनेल बोर्ड



फिल्म स्ट्रिप



इनसाइक्लोपीडिया



पत्र पत्रिकाएँ



ग्लोब

SACHIN ACADEMY

(c) श्रव्य - दृश्य सामग्री (Audio-Visual Learning Material) :- इस प्रकार की सामग्री से बच्चे एक साथ सुनकर और देखकर ज्ञान को अर्जित करते है। इसके उदाहरण है - मोबाइल फ़ोन, टेलीविजन, कंप्यूटर, चलचित्र, नाटक, आदि।



टीवी



कंप्यूटर



नाटक



चलचित्र



कठपुतली

SACHIN ACADEMY

2. तकनीक के आधार पर

(a) कठोर उपागम (Hardware Approach)

(b) मृदु उपागम (Software Approach)

3. परिक्षेपण के आधार पर

(a) प्रक्षेपी सामग्री (projective material) :- जिन चीजों के प्रदर्शन के लिए मशीनो की ज़रूरत होती है वे प्रक्षेपी सामग्री होती है। जैसे - स्लाइड, फिल्म स्ट्रिप, over head projector आदि ।

(b) अप्रक्षेपी सामग्री (non-projective material) :- जिन चीजों के प्रदर्शन के लिए मशीनो की ज़रूरत नहीं होती वे अप्रक्षेपी सामग्री होती है। जैसे - श्यामपट्ठ, चार्ट, पाठ्यपुस्तक आदि ।

4. NCERT के अनुसार

(a) ग्राफ़िक्स चित्र - comics - cartoon

(b) डिस्प्ले सामग्री - ब्लैकबोर्ड, बुलेटिन बोर्ड, फ्लैनेल बोर्ड

(c) त्रिआयामी सामग्री - मॉडल

(d) श्रव्य सामग्री - रेडियो, टैप रिकॉर्डर, लिंग्वाफोन

(e) प्रक्षेपि सामग्री - स्लाइड, फिल्म स्ट्रिप

(f) प्रक्रिया सामग्री - अभिनय और क्षेत्र भ्रमण

SACHIN ACADEMY